कमल संदेश
ikf{kd if=dk

संपादक

प्रभात झा, सांसद

कार्यकारी संपादक

डॉ. शिव शक्ति बक्सी

सहायक संपादक

संजीव कुमार सिन्हा

संपादक मंडल सदस्य

सत्यपाल

कला संपादक

धर्मेन्द्र कौशल
विकास सैनी

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : 100/-
त्रि वार्षिक : 250/-

संपर्क

InL;rk : +91(11) 23005798
Qku (dk-) : +91(11) 23381428
QDI : +91(11) 23387887
पता : डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003

ई-मेल

kamalsandesh@yahoo.co.in

प्रकाशक एवं मुद्रक : डॉ. नन्दकिशोर गर्ग द्वारा डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, के लिए एक्सेलप्रिंट, सी–36, एफ.एफ. कॉम्पलेक्स, झण्डेवालान, नई दिल्ली–55 से मुद्रित करा के, डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003 से प्रकाशित किया गया। सम्पादक – प्रभात झा

विषय-सूची

रैलियां

भाजपा रैली, संबलपुर (ओडिशा) 7
जन चेतना रैली, वर्धा (महाराष्ट्र) 9
हुंकार रैली, पूर्णिया (बिहार) 10

लेख

राजमोहन कहते हैं, शायद महात्मा सही नहीं थे
– **लालकृष्ण आडवाणी** 19
छत्तीसगढ़ में माओवादियों का फिर से हमला
– **अरुण जेटली** 21
नीतिविहीन राजनीति
–**हृदयनारायण दीक्षित** 22
कांग्रेस का आत्मघाती गोल
–**राजनाथ सिंह सूर्य** 24
भरोसा गंवाते केजरीवाल
–**टीआर रामचंद्रन** 25
दक्षिण में डूब रहा कांग्रेस का सूरज
–**अरुण कुमार त्रिपाठी** 27

अन्य

हेण्डरसन रिपोर्ट ने खोली नेहरू की गलतियों की रिपोर्ट 14
क्या हम 1962 के युद्ध से सबक सीखने को तैयार हैं? 16
वकीलों की सभा, नई दिल्ली 29

शुभकामनाएं!

कमल संदेश के सुधी पाठकों को **रामनवमी** की हार्दिक शुभकामनाएं!

बोध कथा

बापू का बड़प्पन

यह घटना आजादी के पहले की है। बिहार के चंपारण जिले में इंग्लैंड से आए कुछ अंग्रेज नील की खेती करते थे। वे निलहे कहलाते थे। ये वहां के किसानों पर बड़ा जुल्म ढाते थे और तरह-तरह से उनका शोषण करते थे। इससे वहां के किसान बेहद त्रस्त थे। उनमें से एक किसान ने गांधीजी से चंपारण आने की प्रार्थना की। गांधी जी ने किसान का आग्रह मान लिया। वे निलहों द्वारा वहां के किसानों पर किए जाने वाले जुल्मों की जांच करने के लिए चंपारण पहुंचे। वहां की जनता बापू के आगमन से प्रसन्न हो उठी। लेकिन निलहों को इससे गुस्सा आ गया। वे आग-बबूला हो उठे। पर गांधीजी इन सबसे अविचलित अपने काम में लगे रहे।

एक दिन गांधीजी को पता चला कि पास का एक निलहा उनसे इतना गुस्सा है कि उन्हें मार डालना चाहता है। यह जानकर एक रात गांधी जी स्वयं चल कर उस निलहे की कोठी पर पहुंचे। निलहे ने उनसे पूछा- तुम कौन हो? वह बापू को पहचानता नहीं था। बापू ने सरल भाव से कहा- मैं गांधी हूं। शायद आपने नाम सुना होगा। निलहा आश्चर्यचकित होता हुआ बोला- तुम यहां किसलिए आए हो? गांधीजी ने कहा- सुना है कि आप मुझे मार डालना चाहते हैं। आपको कष्ट न हो इसलिए मैं स्वयं आपके पास आ गया हूं। लीजिए,आप मुझे मार डालिए।

बापू के इन वचनों को सुनकर उस निलहे के होश उड़ गए। उससे कुछ कहते न बना और वह सिर झुकाए बापू के चरणों की ओर देखता रह गया। इसके बाद उसने किसानों को सताना बंद कर दिया। बापू की निडरता व उनके बड़प्पन को वह जीवन भर नहीं भूला।

संकलन : सुरेंद्र श्रीवास्तव
(नवभारत टाइम्स से साभार)

व्यंग्य चित्र

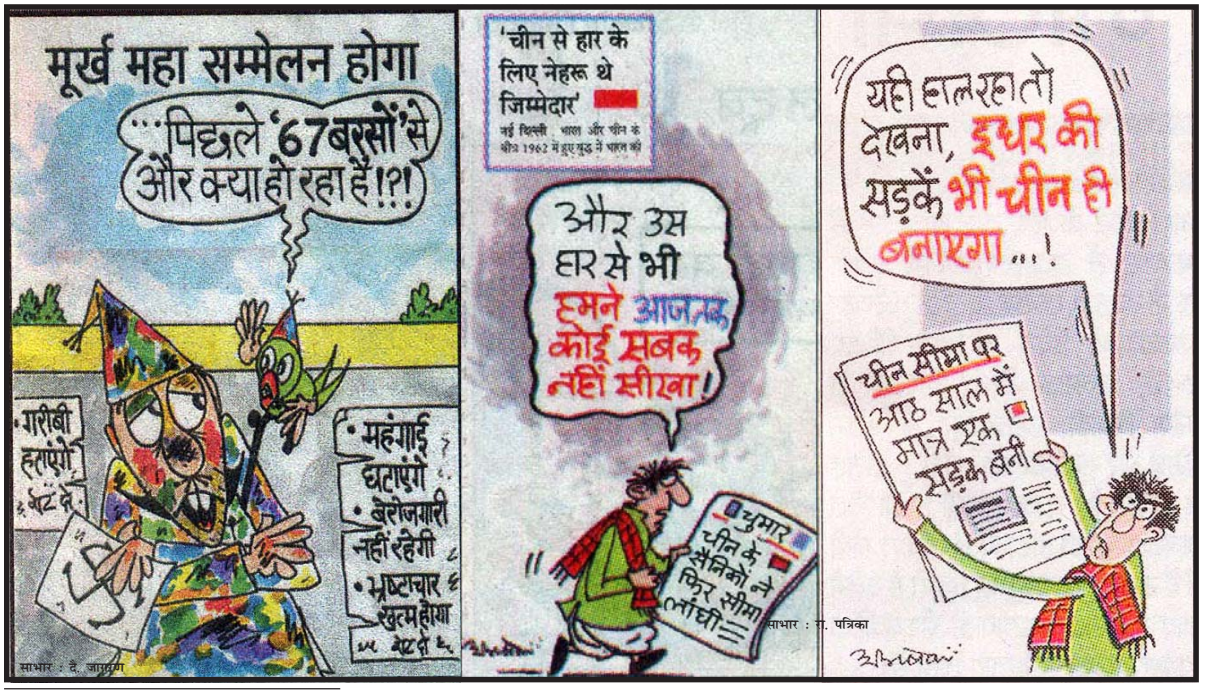

कांग्रेस को अलविदा कहने का समय

जैसे-जैसे मतदान के दिन निकट आ रहे हैं कांग्रेस के हाथ-पांव फूलने शुरू हो गये हैं। जनता को मुंह दिखाना तक मुश्किल हो चुका है इसलिए कुछ तो बीमारी का बहाना बनाकर अस्पतालों में भर्ती हो रहे हैं और कुछ तरह-तरह के टोटकेबाजी में लगे हैं ताकि चुनाव ना लड़ना पड़े। कांग्रेस ना केवल राजनैतिक पतन के कगार पर खड़ी है बल्कि यह पूरी तरह हतोत्साहित एवं थकी-हारी पार्टी है जो अपने भविष्य को लेकर बुरी तरह आशंकित है। अपनी इस स्थिति के लिए कांग्रेस स्वयं दोषी है। इसने ना केवल जनता के लिए काम करने के मौके को गंवाया बल्कि देश के एक दशक बर्बाद करने के अपराध से यह स्वयं को मुक्त नहीं कर सकती। यह अपनी नाकामियों की जिम्मेदारियों से भाग नहीं सकती। यह हर मोर्चे पर विफल रही और अब चुनावों में अपने सफाये का इंतजार कर रही है। अब 50 से भी कम दिन बचे हैं जब देश कांग्रेस से छुटकारा पा लेगी। अब जबकि लोग कांग्रेस को अलविदा कहने की तैयारी कर रहे हैं, राजनीतिक पंडित इसकी बिदाई पर एकमत हैं। सभी चुनावी भविष्यवाणियां इस दिशा में संकेत कर रहे हैं कि कांग्रेस इस बार इतना नीचे गिरेगी कि इसे अपने राख से फिर उठ पाना मुश्किल ही नहीं असंभव होगा। लगता है कांग्रेस इतिहास के पन्नों में अब सिमट जाने को तैयार हो चुकी है।

कांग्रेसनीत संप्रग सरकार अपने पीछे भ्रष्टाचार, नीतिगत पंगुता, आर्थिक गिरावट एवं कुशासन की एक विरासत छोड़कर जा रही है। विदेशी बैंकों में जमा भारत का काला धन को वापस लाने से इन्कार करने के लिए इस सरकार को याद किया जायेगा। इसने भ्रष्टाचार एवं लूट में सभी रिकार्ड तोड़ दिए। इतिहास में इसका नाम 2जी, कोलगेट, राष्ट्रमंडल खेल घोटाला, आदर्श, अगस्टा वेस्टलैण्ड जैसे अनगिनत घोटाले के लिए दर्ज किया जाएगा। सर्वोच्च न्यायालय द्वारा कई बार फटकारे जाने के लिए भी इसने अपना नाम इतिहास के पन्नों में सुरक्षित कर लिया है। सीएजी ने कई मौकों पर इस पर प्रश्न चिह्न खड़े किए हैं। सीबीआई निदेशक ने भी इस पर अनावश्यक दबाव डालने के आरोप लगाये हैं। लोकपाल के मुद्दे पर रोड़े अटकाने और भ्रष्टाचार के खिलाफ पहल ना किया जाना जगजाहिर है। इस सरकार का दौर आर्थिक गिरावट एवं नीतिगत पंगुता का दौर रहा। इस सरकार को चीन एवं पाकिस्तान की घुड़कियों के सामने घुटने टेकने के लिए याद रखा जायेगा। यह एक ऐसी कमजोर सरकार थी जिसने भयंकर परिस्थितियों में भी अपनी जिम्मेदारियों से मुंह मोड़ लिया।

कांग्रेस-नीत संप्रग सरकार को अभूतपूर्व महंगाई एवं बेरोजगारी के लिए भी याद रखा जायेगा। इसने आम जनता का जीना मुहाल कर दिया तथा लोग त्राहिमाम करने को मजबूर हो गये। 2009 के लोकसभा चुनावों के दौरान सत्ता में आने के 100 दिनों के अंदर महंगाई कम करने के वादे को पूरा करने की जगह कांग्रेस ने महंगाई को बढ़ाने की नीतियों को बढ़ावा दिया। लोगों की कठिनाईयों से नाता तोड़ चुकी कांग्रेस के दौर में एक समय खाद्य मुद्रास्फीति 18.5 प्रतिशत तक पहुंच गई। एक तरफ जहां जरूरी सामानों की कीमत आसमान छू रही थी, बढ़ती बेरोजगारी ने कोढ़ में खाज का काम किया। जब लोग राहत की मांग कर रहे थे प्रधानमंत्री अपने कान बंद कर 'वैश्विक मंदी' और 'बाहरी कारणों' पर अपनी सरकार की असफलता का ठीकरा फोड़ रहे थे। अपनी सरकार की अक्षमता एवं अकर्मण्यता की तरफ से वे आंख मूंदे रहे। भारी भ्रष्टाचार और लूट के कारण महंगाई भयंकर रूप से बढ़ी जिससे कि आर्थिक मंदी और कमरतोड़ बेरोजगारी का सामना लोगों को करना पड़ा।

भाजपा के प्रधानमंत्री पद के प्रत्याशी श्री नरेन्द्र मोदी के 'कांग्रेस मुक्त भारत' बनाने के आह्वान

से जनता उत्साहित है। आज कांग्रेस भ्रष्टाचार, लूट एवं आम जनजीवन में विभिन्न प्रकार की गिरावट का प्रतिनिधित्व करती है। देश की राजनैतिक संस्कृति में व्याप्त सड़ांध के लिए यह जिम्मेदार है। 'कांग्रेस मुक्त भारत' का अर्थ भ्रष्टाचार, लूट-खसोट, चमचागिरी की संस्कृति, वंशवादी राजनीति, अनैतिक कार्यों, संवैधानिक संस्थाओं पर हमला, एवं जनविरोधी नीतियों से मुक्त भारत के निर्माण का है। देश एक सक्रिय एवं मजबूत नेतृत्व की बाट जोह रहा है जो एक विकसित एवं समृद्ध भारत का निर्माण कर सके। कांग्रेस के पास आज खोखले वादों, दिशाहीन, अस्पष्ट एवं प्रेरणाहीन नेतृत्व, जो देश को अराजकता एवं निराशा में धकेलने को आतुर हैं, के सिवा कुछ नहीं दे सकती। इसके नारे इतने बार दोहराये जा चुके हैं कि वे अर्थहीन हो चुके हैं और इनसे अब जनता को और मूर्ख नहीं बनाया जा सकता। यह अब अतीत की पार्टी बन चुकी है और इतिहास के पन्नों में कैद हो जाने के लिए तैयार है। यही कारण है कि अब कांग्रेस के भी लोग पार्टी को छोड़कर बड़ी संख्या में भाजपा में शामिल हो रहे हैं। कांग्रेस अब उनका न तो नेतृत्व कर सकती है, न ही देश को कोई दिशा दे सकती है। असल में न तो कांग्रेस के पास देश के लिए कोई दृष्टि नहीं है। इसकी निगाहें केवल किसी भी तरह सत्ता पाने पर टिकी है।

आज यह निष्क्रियता, दृष्टि की कमी और देश के लिए समर्पण की भावना की कमी के दलदल में धंस चुकी है। अब कांग्रेस को अलविदा कहने का समय आ चुका है। ■

अपने तरह की पहली भारत विजय रैलियां

भाजपा के मिशन 272+ के लिए आखिरी पहल होंगी

आम चुनाव 2014 के पहले चरण में तीन हफ्ते से भी कम समय बचा है, भारतीय जनता पार्टी ने घोषणा की है कि वह मिशन 272+ का लक्ष्य हासिल करने और श्री नरेन्द्र मोदी का भारत का अगला प्रधानमंत्री बनना सुनिश्चित करने के लिए आखिरी पहल के रूप में देश भर में भारत विजय रैलियां आयोजित करेगी।

26 मार्च से शुरु हो रही इस मैराथन पहल के अंतर्गत बाकी सात सप्ताह पार्टी के प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार श्री नरेन्द्र मोदी 295 संसदीय निर्वाचन क्षेत्रों में 185 भारत विजय रैलियों को संबोधित करेंगे।

भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष और पार्टी की केन्द्रीय चुनाव प्रबंध समिति, कार्यक्रम और संचालन समिति के प्रभारी श्री मुख्तार अब्बास नकवी ने बताया कि भारत विजय रैलियों की अवधारणा अपने तरह की अनोखी है और इसका उद्देश्य चुनाव से पहले मतदाताओं तक श्री नरेन्द्र मोदी की अधिकतम पहुंच बनाना है। इसके अलावा भारत विजय रैलियां पार्टी के स्थानीय और केन्द्रीय नेतृत्व के बीच विस्तृत योजना और समन्वय के जरिये परम्परागत रैलियों को अधिक आकर्षक, दिलचस्प और गहरा असरकारक बना देंगी।

भारत विजय रैलियां स्थानीय जरूरतों के अनुरूप मानकीकृत प्रारूप का अनोखा मिश्रण होंगी। विजय रैलियों के दौरान बैनरों, प्रतीक चिन्ह और कार्य प्रणाली पर विशेष जोर दिया जाएगा। पार्टी के कार्यकर्ताओं और स्वयंसेवकों को निर्देश पत्र के साथ विशेष किट मिलेंगे जिनमें प्रत्येक भारत विजय रैली से पहले और बाद का कार्यक्रम होगा। इनमें यह सुनिश्चित किया जाएगा कि प्रत्येक भारत विजय रैली के लिए -

1. व्यक्तिगत निमंत्रण पत्र के जरिए बड़ी संख्या में प्रतिनिधि और स्थानीय मतदाता मौजूद रहे और उन्हें यूपीए सरकार की काली करतूतों के बारे में अच्छी तरह बताया जाए।
2. लोगों को श्री नरेन्द्र मोदी का विजन बताया जाए और रैली से पहले और बाद में संदेश दिया जाएगा।
3. नमो सुझाव पत्र के जरिये जनता से समग्र सुझाव लिए जाएंगे और
4. प्रधानमंत्री पद के लिए मोदी कोष के लिए धन जुटाने का तंत्र बनाया जाएगा।

भारत विजय रैलियां परम्परागत रैलियों से इस मायने में अलग होंगी कि उनमें बड़ी संख्या में जनता के साथ सीधी बातचीत होगी। इस तरह की रैलियां केवल चुनाव प्रचार के लिए ही नहीं होंगी बल्कि रैली समाप्त होने के बाद विशेष रूप से प्रचार पुस्तिकाओं और सीडी के जरिये पार्टी का संदेश ओर विजन बताया जाएगा-इनमें श्री नरेन्द्र मोदी के भाषण का सारांश होगा। ■

भाजपा रैली, संबलपुर (ओडिशा)

झूठे वादे करने में कांग्रेस को विशेषज्ञता हासिल : नरेन्द्र मोदी

भाजपा के प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार श्री नरेंद्र मोदी ने 14 मार्च को ओडिशा के संबलपुर में एक चुनावी रैली को संबोधित किया। यहां पर उन्होंने केंद्र सरकार को जमकर कोसते हुए कहा कि कांग्रेस के रहते सिर्फ देश में महंगाई बढ़ी है। देश के गरीबों की हालत आज आजादी के इतने वर्षों के बाद भी सुधरी नहीं है।

श्री मोदी ने कहा कि केंद्र हर क्षेत्र में नाकाम रहा है। गरीबों के घर में चूल्हा नहीं जल रहा है। इसके बाद भी कांग्रेस को इन भूखे लोगों के लिए कानून बनाने में साठ वर्ष लग गए।

श्री मोदी ने रैली के दौरान कांग्रेस पर वार करते हुए कहा कि कांग्रेस लगातार कई सालों से जनता को धोखा दे रही है। और जनता धोखा देने वालों को कभी माफ नहीं करती है। भाजपा का मकसद सिर्फ सत्ता में आना नहीं बल्कि देश का विकास करना है। श्री मोदी ने आगे कहा कि कांग्रेस झूठे वायदे करने में माहिर है। 60 साल से हर चुनाव में एक नया झूठ बोलती है।

श्री मोदी ने कहा कि कांग्रेस ने वादा किया था कि हम सौ दिन में महंगाई कम करेंगे, लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। इसके उलट महंगाई बढ़ गई। गरीब के घर में आजकल चूल्हा नहीं जल रहा है। बच्चे भूखे सोते हैं, मां रात रात भर रोती है। गरीबों के प्रति यदि कांग्रेस का यही रवैया रहा तो ये कभी भी इनका भला नहीं कर सकती।

श्री मोदी ने कहा कि कांग्रेस को यदि आदिवासियों की चिंता होती तो वो बहुत पहले से इनके लिए काम शुरू कर देती। आदिवासियों को जमीन का हक चाहिए और यदि किसी ने भी इन्हें देश में जमीन का हक दिया है तो वो सिर्फ भारतीय जनता पार्टी ही है। 1857 स्वराज्य की लड़ाई थी और 2014 सुराज्य की लड़ाई है।

श्री मोदी ने ओडिशा की जनता से आशीर्वाद मांगा और कहा कि मैं जनता के आंसू पोंछने के लिए आना चाहता हूं। उन्होंने कहा कि मौजूदा हालत में बदलाव नहीं किया गया तो हमारा देश काफी पीछे रह जाएगा। पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के शासन में गरीबों और आदिवासियों के लिए काफी काम किए गए। भाजपा ने ही आदिवासियों को हक दिलाया।

श्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि केंद्र में कांग्रेस के नेतृत्व वाली यूपीए सरकार किसानों की अनदेखी कर रही है। सत्ताधारी कांग्रेस पार्टी की सरकार में राजनीतिक इच्छाशक्ति का अभाव है और यह सरकार किसानों और गरीबों के हितों की अनदेखी कर रही है। उन्होंने कहा कि भाजपा शासित राज्य कृषि विकास और सरकारी मदद से गरीबी से निकल कर विकास के मार्ग पर आगे बढ़ रहे हैं।

श्री मोदीजी के भाषण के मुख्य बिन्दु:

- इस बार लोक सभा और विधानसभा चुनाव साथ-साथ

हैं, मैं यहां उपस्थिति सभी उम्मीदवारों का स्वागत करता हूं।

- यहां गर्मी होने के बावजूद काफी संख्या में लोग उपस्थिति हुए हैं। इससे पता चलता है कि चुनाव का नतीजा क्या रहने वाला है।
- हवा तेज है, चुनाव आते ही आंधी नजर आने लगी है और मतदान के समय यह सुनामी में बदल जाएगी।
- ऐसा नहीं है कि लोग सिर्फ भाजपा की सरकार या मोदी को प्रधानमंत्री के तौर पर देखना चाहते हैं, हकीकत तो यह है कि जनता उन लोगों को सजा देना चाहती है जिन्होंने देश को बरबाद किया है।
- अगर कोई व्यक्ति गलती करता है तो लोग उसे क्षमा कर देते हैं। अगर कोई कमी है तो भी लोग कहते हैं कि ठीक है, लेकिन धोखेबाजों को जनता कभी माफ नहीं करती है।
- कांग्रेस को झूठे वादे करने में विशेषज्ञता हासिल है।
- चुनाव आते ही कांग्रेस नये झूठ के साथ सामने आती है।
- पिछली बार मैं यहां 2009 में आया था। उस समय रैली छोटी थी। उस समय कांग्रेस ने कहा था कि वह 100 दिन में महंगाई कम कर देगी।
- कांग्रेस पार्टी जैसी है उस हिसाब से वह कभी भी गरीबों का हित नहीं कर सकती। उन्हें समस्याएं समझने में ही 60 साल लग गये।
- साठ साल के बाद कांग्रेस को याद आया कि उन्हें गरीबों को भोजन देने के लिए कानून बनाना है। क्या उन्हें इतने साल तक इसकी याद नहीं आई।
- जितनी साल हम उन्हें बर्दाश्त करेंगे,उतना ही लोगों के साथ अन्याय होगा।
- मैं आपका आशीर्वाद लेने आया हूं ताकि मैं आपकी सेवा कर सकूं और आपके आंसू पोंछ सकूं।
- दुनिया काफी तेजी से आगे बढ रही है, हम इस तरह रुक नहीं सकते, अन्यथा हम पीछे छूट जायेंगे।
- कांग्रेस भारत के आदिवासी और गरीबों के बारे में चिंता नहीं कर सकती।
- जब अटलजी की सरकार थी तब आदिवासियों के लिए एक नया मंत्रालय और बजट आवंटित किया था।
- अगर किसी सरकार ने आदिवासियों को जमीन अधिकार देने का काम किया है तो वह भाजपा सरकार थी।
- कुछ समय पहले यहां एक हादसा हुआ था, कई लोगों की जानें गयीं। उन लोगों को मेरी श्रद्धांजलि है।
- हमें वीर सुरेंद्र साई याद है जिन्होंने 1857 से पहले ही अंग्रेजों को चुनौती दी थी।
- किसान कड़ी मेहनत करने को तैयार हैं। उन्हें सही दिशा देने की जरूरत है। वे अपनी ताकत दिखा सकते हैं।
- संभलपुर को हस्तशिल्प और कला के लिए जाना जाता है। भारत में और विश्व में इसका बाजार क्यों नहीं बनाया जा सकता।
- छत्तीसगढ़ आपके निकट ही है, आप छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश में भाजपा की सरकार द्वारा किए गए उल्लेखनीय कार्य को देखिए।
- अभी मध्य प्रदेश में भयंकर ओलावृष्टि हुई। मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान को केंद्र की सोयी हुई सरकार को जगाने के लिए धरने पर बैठना पड़ा। अन्यथा केंद्र सरकार पर कोई फर्क नहीं पड़ता।
- मध्य प्रदेश के किसान हमारे भाई हैं। हम उन्हें पीड़ा में नहीं देख सकते। मैंने शिवराजजी को इतना चिंतित कभी नहीं देखा, लेकिन केंद्र पर अभी तक कोई फर्क नहीं पड़ा है।
- कांग्रेस सरकार मध्य प्रदेश के किसानों को अपना नहीं मानती क्योंकि उन्होंने एक भाजपा सरकार को चुना है।
- हम सभी एक हैं। सभी को न्याय मिलना चाहिए। हर चीज को राजनीतिक आइने में नहीं देखा जा सकता।
- हम सभी देश की समस्याओं का हल ढूंढने में लगे हैं लेकिन वे सिर्फ मोदी का हल निकालने में जुटे हैं।
- कांग्रेस को सिर्फ एक ही चिंता है कि अगर मोदी आया तो क्या होगा।
- हमारे विदेश मंत्री लंदन में थे। उन्होंने वहां जो भाषण दिया है उसने मुझे झकझोर दिया है।
- हमें अपने लोकतंत्र पर गर्व है। हमारे यहां इतना शानदार चुनाव तंत्र है। हमारी चुनाव प्रक्रिया बहुत जल्दी और अच्छी तरह संपन्न होती है और चुनाव आयोग इसे संपन्न कराता है।
- हमें अपने चुनाव आयोग पर गर्व करना चाहिए लेकिन विदेश मंत्री लंदन में जाकर चुनाव आयोग की आलोचना कर रहे हैं।
- उन्हें हार का डर है इसलिए चुनाव आयोग की आलोचना कर रहे हैं।
- हमारे विदेश मंत्री ने लंदन में बयान जारी कर सुप्रीम कोर्ट को भी भला-बुरा कहा है। वह इस तरह की शीर्ष

संस्थाओं की आलोचना कैसे कर सकते हैं।

- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का नाम बदलकर संस्थाओं की अनदेखी करने वाली कांग्रेस रखना चाहिए।
- उनकी आदत दुरुपयोग करने, अपमानित करने और संस्थाओं का मान सम्मान घटाने की है।
- दिल्ली में नाममात्र की सरकार नहीं बल्कि काम करने वाली सरकार होनी चाहिए। इसलिए हमें आपके वोट की जरूरत है।
- क्यो आपको अपने मुख्यमंत्री से उम्मीद है, क्या उनके पास आपके लिए वक्त है। मैं उन लोगों की चर्चा क्यों करुं जिनके पास आपके लिए वक्त ही नहीं है।
- क्या वे महंगाई घटाने की बात करते हैं। हम कहते हैं कि महंगाई घटाओ, वे कहते हैं कि मोदी को रोको। इसके अलावा उनके पास कोई एजेंडा नहीं है। ■

जन चेतना रैली, वर्धा (महाराष्ट्र)

'कांग्रेस राज में किसान, जवान सुरक्षित नहीं'

भाजपा के प्रधानमंत्री के प्रत्याशी श्री नरेंद्र मोदी ने 20 मार्च को महाराष्ट्र के वर्धा में 'जन चेतना रैली' को संबोधित करते हुए किसानों की बर्बादी के लिए यूपीए सरकार पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने कपास के किसानों की बदहाली के लिए सरकार की खराब कृषि नीति को जिम्मेदार ठहराया। श्री मोदी ने अपने भाषण में

ओलावृष्टि प्रभावित किसानों की समस्याओं का विस्तार से जिक्र किया।

श्री मोदी ने पूर्व प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री की तारीफ करते हुए कहा, 'शास्त्री जी ने इस देश के किसानों को जगाया था। उन्होंने 'जय जवान, जय किसान' का मंत्र दिया और हिंदुस्तान के किसानों ने अन्न के भंडार भर दिए थे। आज दुख है कि कांग्रेस के कुशासन के कारण आजादी के बाद इतने लंबे समय तक देश पर शासन करने वाली कांग्रेस और उनके सारे चट्टों-बट्टों ने देश को बर्बाद करने में कोई कमी नहीं रखी है।'

श्री मोदी ने कहा कि किसानों के साथ देश के जवान भी सुरक्षित नहीं हैं। उन्होंने कहा कि पाकिस्तानी सैनिक हमारे देश के जवानों के सिर काटकर ले जा रहे हैं। सेना का जवान अगर सुरक्षित नहीं है तो हम किस मुंह से जय जवान के नारे लगाएंगे।

उन्होंने कहा कि आज कांग्रेस के शहजादे वोट बटोरने के लिए जनता की आंख में धूल झोंक रहे हैं। मैंने 'वन रैंक, वन पेंशन' का मुद्दा उठाया और उन्होंने तीन दिन में काम कर दिया।

श्री मोदी ने कहा कि युद्ध में दुश्मनों के साथ लड़ाई लड़ते-लड़ते जितने जवान मरे हैं, उससे ज्यादा हमारे जवान आतंकियों के हाथों से मरे हैं। जवानों को बेमौत मरने के लिए छोड़ दिया गया है। इसी तरह किसान भी सुरक्षित नहीं है। केंद्र सरकार और उसके कृषि मंत्री पर किसी को भरोसा नहीं है।

श्री मोदी ने कपास पर बैन लगाए जाने के सरकार फैसले पर भी सवाल उठाए। उन्होंने कहा, 'कपास पर अचानक कॉटन एक्सपोर्ट पर प्रतिबंध क्यों लगाया गया। इससे अकेले गुजरात में 7 हजार करोड़ रुपये का घाटा हुआ। यह ऐसी सरकार है कि किसान को पैसे मिले तो बैन लगा देती है, लेकिन मटन एक्सपोर्ट पर सब्सिडी देती है। मटन पर सब्सिडी के कारण उत्तर भारत में बड़े पैमाने पर पशु कट रहे हैं।'

श्री मोदी ने कहा कि ट्यूबवेल में बच्चा गिर जाए तो रनिंग कॉमेंट्री शुरू हो जाती है। खूब तमाशा होता है। एक बच्चा ट्यूबवेल में गिर जाए तो देश की सांसें ऊपर-नीचे होती हैं। देश का किसान मर जाए तो देश की सरकार चैन से सो जाती है।

हुंकार रैली, पूर्णिया (बिहार)

'लठबंधन-भ्रष्टबंधन से नहीं चलेगा देश'

भाजपा के प्रधानमंत्री के उम्मीदवार श्री नरेंद्र मोदी ने बिहार के पूर्णिया में हुंकार रैली को संबोधित करते हुए अपने राजनीतिक विरोधियों पर जमकर हमले किए। श्री मोदी ने कहा कि इस समय गठबंधन, भ्रष्टबंधन और लठबंधन का दौर चल रहा है। श्री मोदी ने कहा, 'बिहार की गाय-भैंसे डर गई हैं कि कहीं इनका (कांग्रेस-राजद) गठबंधन फिर से हमें बिना चारे के तो नहीं रख देगा।

श्री मोदी ने सवाल किया, 'बिहार में एनडीए का गठबंधन क्यों तोड़ा गया? किसी ने कहा उनकी आदत है पीठ में छुरा घोंपने की। ऐसे कारनामों से जयप्रकाश नारायण, राममनोहर लोहिया को कितनी पीड़ा हुई होगी? चार दिन पहले पता चला गया कि गठबंधन क्यों टूटा। पीएम का सपना उन्हें सोने नहीं देता था। उनके ख्वाब एवरेस्ट से भी ऊंचे हैं। कहते हैं कि उनके बिना इस देश में कोई प्रधानमंत्री का योग्य उम्मीदवार नहीं है।'

बिहार को विशेष राज्य का दर्जा देने का वादा करते हुए श्री मोदी ने कहा, 'बाढ़ आपदा के दौरान बिहार की सरकार ने गुजरात सरकार का ऑफर ठुकरा दिया था। इनका अहंकार एवरेस्ट से भी ऊंचा है। ऐसे अहंकारी नेताओं को घोषणा करनी होगी तो जब दिल्ली में एनडीए की सरकार बनेगी और दिल्ली की सरकार बिहार के विकास के लिए कोई योजना बनाती है तो ये नेता ये तो नहीं कहेंगे कि यह मोदी की सरकार की योजना है, इसे हम लागू नहीं करेंगे। बिहार के नागरिकों के हक तो नहीं ठुकराएंगे। और गुजरात का पैसा ठुकरा कर जो पाप किया था, उसके लिए माफी मांगें।'

श्री मोदी ने तीसरे मोर्चे पर हमला बोलते हुए इसे पूर्व प्रधानमंत्रियों की टोली करार दिया। उन्होंने कहा कि इस मोर्चा में एक दर्जन से ज्यादा लोग ऐसे हैं जो प्रधानमंत्री के लिए कपड़े बनवाकर बैठे हैं।

उन्होंने सवाल किया कि जब गुजरात में प्राकृतिक आपदा आई थी तब यह मोर्चा कहां था? जब असम में दंगे हुए तब तीसरा मोर्चा कहा था? जब सेना के जवानों के सिर काट लिए गए, तब यह तीसरा मोर्चा कहा था? उत्तर प्रदेश में साल भर में 150 दंगे हुए, तब यह तीसरा मोर्चा कहां था। जब

चुनाव का बिगुल बजता है तभी इनकी नींद टूटती है और फिर सो जाते हैं।'

श्री मोदी ने केंद्र में कांग्रेस की अगुवाई वाली यूपीए सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि देश के लोगों को दिल्ली में मरी हुई सरकार, बाहरी ऑक्सीजन से चलने वाली सरकार से मुक्ति चाहिए। उन्होंने कहा, 'पहले बिहार में जंगलराज था, आज देशभर में जंगलराज है। वोट बैंक में डूबे हुए राजनेताओं की जमात आने वाली पीढियों को भी तबाह करने का पाप कर रही है। बिहार के लोग इस जंगलराज से मुक्ति का रास्ता दिखा सकते हैं।'

श्री मोदी ने कहा कि शाहजादा का अहंकार सातवें आसमान पर है। ऐसे बात करते हैं जैसे मंगल ग्रह से आए हैं। ये कांग्रेस के शहजादे पहले घोषित करें कि दिल्ली में आपकी सरकार है या नहीं। यह क्या बात हुई कि तालाब से निकलें और शरीर पर पानी की एक बूंद न हो।'

श्री मोदी ने कहा, 'शाहजादे महंगाई, भ्रष्टाचार और बेरोजगारी पर जवाब नहीं देते। वो दावा करते हैं कि देश के लोगों को मोबाइल फोन उनकी सरकार ने दिए, लेकिन मैं पूछता हूं कि इस मोबाइल फोन को चार्ज करने के लिए बिजली कहां हैं?' उन्होंने कहा, 'केंद्र के मंत्री ने आकाश टैबलेट लाने का ऐलान किया था। मैं पूछना चाहता हूं कि यह आकाश में से धरती पर कब आएगा? उस पर खर्च किए गए रुपये कहां गए? देश जानना चाहता है।'

श्री मोदी ने रैली में भाषण के दौरान गुजरात में भाजपा सरकार के विकास के आंकड़े पेश किए। उन्होंने दावा किया कि गुजरात में असम, हरियाणा जैसे कांग्रेसशासित राज्यों की तुलना में कई गुना ज्यादा विकास हुआ है।

उन्होंने कहा कि बिहार में प्रतिभाशाली युवकों की कमी नहीं है लेकिन यहां की सरकार इनकी भलाई के लिए कोई काम नहीं करती। श्री मोदी ने अन्य पार्टियों पर हमला बोलते हुए कहा कि वोट बैंक की राजनीति के लिए मुसलमानों को ठगा गया है। उन्होंने कहा, 'गुजरात का सेक्युलरिज्म सच्चा सेक्युलरिज्म है जो सबका विकास करता है। हमारा विकास का मंत्र है विविधता में एकता। हम विविधता का सम्मान करने वाले लोग हैं।'

अपने भाषण की शुरुआत में श्री मोदी ने मैथिली में अपनी बात कहकर लोगों के मन पर अमिट छाप छोड़ी। श्री मोदी ने उम्मीद जताई कि देश में विकास, प्रगति, आत्मीयता, सद्भावना और भाईचारे का रंग बिखरेगी। श्री मोदी ने भाषण की शुरुआत में मशहूर साहित्यकार फणीश्वर नाथ रेणु को भी याद किया। मोदी ने भाषण का समापन करते हुए भी लोगों को होली की शुभकामनाएं दी।

श्री मोदी के साथ मंच पर बिहार के पूर्व उप मुख्यमंत्री श्री सुशील कुमार मोदी, भाजपा के स्थानीय सांसद श्री उदय सिंह, भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री राजीव प्रताप रूडी, लोजपा नेता श्री रामचंद्र पासवान, बिहार भाजपा के अध्यक्ष श्री मंगल पांडे के अलावा पार्टी के बिहार विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष श्री नंद किशोर यादव, श्री सी पी ठाकुर, श्री अश्विनी चौबे, श्री शाहनवाज हुसैन, श्री कीर्ति झा आजाद, श्री रामेश्वर चौरसिया और गिरिराज सिंह भी उपस्थित रहे।■

उत्तर प्रदेश में भाजपा-अपना दल में गठबंधन

गत 24 मार्च 2014 को भारतीय जनता पार्टी का उत्तर प्रदेश में 'अपना दल' के साथ गठबंधन हो गया है। भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री मुख्तार अब्बास नकवी ने बताया कि उत्तर प्रदेश में 'अपना दल' दो सीटों पर चुनाव लड़ेगी और शेष सभी सीटों पर भारतीय जनता पार्टी का समर्थन करेगी। इस अवसर पर भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री मुख्तार अब्बास नकवी, उत्तर प्रदेश के प्रभारी एवं राष्ट्रीय महामंत्री श्री अमित शाह, राष्ट्रीय महामंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा, 'अपना दल' की अध्यक्षा श्रीमती कृष्णा पटेल एवं 'अपना दल' की महामंत्री कुमारी अनुप्रिया पटेल उपस्थित थे।

हरिबाबू सीमांध्र, किशन रेड्डी तेलंगाना प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष बने

श्री हरि बाबू

श्री किशन रेड्डी

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने श्री हरिबाबू को आंध्र प्रदेश (सीमांध्र) और श्री जी किशन रेड्डी को नव गठित तेलंगाना राज्य का प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त किया। गत 13 मार्च को जारी विज्ञप्ति में श्री राजनाथ सिंह ने आंध्रप्रदेश का विभाजन होने और नया तेलंगाना राज्य बनने के बाद यह नियुक्ति की है। श्री रेड्डी अभी तक अविभाजित आंध्रप्रदेश के प्रदेश अध्यक्ष थे। श्री सिंह ने श्री सोमू वीराजू को भाजपा की आंध्र प्रदेश (सीमांध्र) इकाई की चुनाव प्रबंधन समिति का संयोजक नियुक्त किया।

गुजरात को लगातार दूसरी बार 'आर्थिक स्वतंत्रता देने वाले राज्यों' में शीर्ष स्थान मिला

हाल की भारत के राज्यों की आर्थिक स्वतंत्रता 2013 की रिपोर्ट के अनुसार गुजरात आर्थिक स्वतंत्रता देने वाले राज्यों में शीर्ष पर है।

भारत के राज्यों की आर्थिक स्वतंत्रता (EFSI) , 2013 विश्व की आर्थिक स्वतंत्रता के फ्रेजर संस्थान (EFW) की वार्षिक रिपोर्ट से ली गई एक पद्धति का उपयोग करके देश के 20 सबसे बड़े राज्यों में आर्थिक स्वतंत्रता का अनुमान लगाया है।

रिपोर्ट के मुताबिक, गुजरात ने 0.65 (0 से 1.0 के पैमाने पर) के स्कोर के साथ ही आर्थिक स्वतंत्रता तालिका के शीर्ष पर रहकर अपनी बढ़त को और भी ज्यादा कर लिया है। गुजरात, जिसे 0.46 के स्कोर के साथ 2005 की पहली रिपोर्ट में 5वां स्थान मिला था उसी गुजरात को 2013 की रिपोर्ट में 0.65 के स्कोर के साथ पहला स्थान दिया गया है।

प्रख्यात अर्थशास्त्री श्री बिबेक देबरॉय (प्रोफेसर, सेंटर फॉर पॉलिसी रिसर्च), श्री लवीश भंडारी (1996 में भारत के एक्जिम बैंक द्वारा सबसे अच्छा थीसिस पुरस्कार के प्राप्तकर्ता) और श्री स्वामीनाथन एस. अंकलेसरिया अय्यर (केटो इंस्टीट्यूट में रिसर्च फैलो) द्वारा तैयार इस रिपोर्ट को फ्रेडरिक-नौमानस्टिफुंग, केटो संस्थान और एकेडेमिक फाउंडेशन, नई दिल्ली द्वारा संयुक्त प्रयास से प्रकाशित किया गया। रिपोर्ट विशाल, विविध भारत में आर्थिक स्वतंत्रता के स्तर को मापने का प्रयास करती है, और इस साल इसने बेहतर आर्थिक और सामाजिक परिणाम देने वाली राज्य स्तरीय नीति द्वारा सुधार और प्रयोग के महत्व पर प्रकाश डाला गया है।

आर्थिक स्वतंत्रता सूचकांक 3 मानकों पर आधारित है। 1. सरकार का आकार (व्यय, करों और उद्यम) 2 . कानूनी ढांचा और संपदा अधिकारों की सुरक्षा और 3. श्रम और व्यापार का विनियमन। प्रत्येक राज्य को तीन मानकों के आधार पर स्कोर दिए जाते हैं और फिर एक समग्र स्कोर और रैंक दिया जाता है।

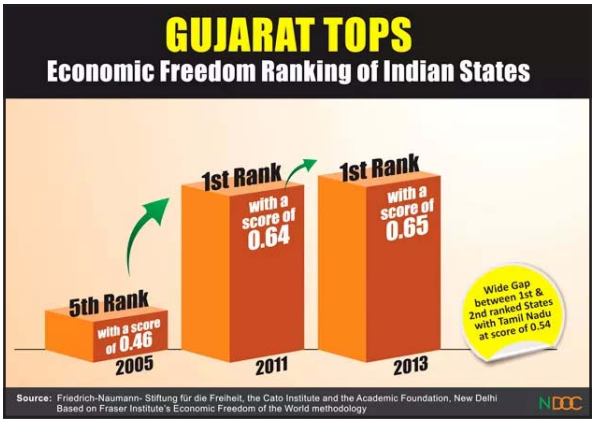

सरकार के आकार के पहलू का विश्लेषण करते हुए, रिपोर्ट में कहा गया है, "गुजरात की पूरे 2000 के दशक की सफलता की एक जानी-मानी कहानी है। इसके अलावा इसने कृषि , समाज कल्याण कार्यक्रमों और जल संसाधन प्रबंधन में काफी सफलता प्राप्त की है। इतना सब सरकार के आकार में बेतहाशा वृद्धि के बिना ही हासिल किया गया है।" यह उल्लेखनीय बात है कि रिपोर्ट के लेखकों द्वारा उल्लेख की गई पूरी अवधि के दौरान श्री नरेन्द्र मोदी ही राज्य के मुख्यमंत्री रहे हैं।

गुजरात ने अपने सूचकांक मूल्यों में भी महत्वपूर्ण सुधार देखा है और 'श्रम और व्यापार का विनियमन' में अपनी पूर्व प्रतिष्ठा को बरकरार रखे हुए है। रिपोर्ट के अनुसार "गुजरात लगातार इस क्षेत्र में सबसे अच्छा राज्य रहा है। वर्ष 2011 के बाद से सूचकांक स्कोर में अधिकतम सुधार दर्ज किया गया है और 0.87 के अपने स्कोर के साथ यह दूसरे राज्यों से काफी आगे है और दूसरे स्थान पर है। गुजरात की सतत सुधार के लिए कई कारकों का योगदान रहा है। हड़तालों और तालाबंदी के कारण कम हुए मानव-दिवसों में तेज गिरावट, न्यूनतम मजदूरी दर की तुलना में ऊँची बाजार मजदूरी दर और मामलों के लम्बित होने में आने वाली गिरावट कुछ प्रमुख कारक हैं।"

वर्ष 2005-11 के दौरान गुजरात ने जीएसडीपी में 12 प्रतिशत की औसत वृद्धि दर दर्ज की गई थी, जो बड़े राज्यों में सबसे अधिक है।

हालांकि, रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि कम से कम सात राज्यों को 2011 की तुलना में 2013 में आर्थिक स्वतंत्रता मूल्यांकन में गिरावट का सामना करना पड़ा है।

एक मजबूत विजन, एक निर्धारित

मिशन, विकास और प्रशंसा के योग्य है।

यूएसए कांग्रेसनल थिंक टैंक (USA Congressional Think Tanks), ब्रूकिंग्स इंस्टीट्यूट (Brookings Institutions), फाइनेंशियल टाइम्स (Financial Times), वॉल स्ट्रीट जर्नल (Wall Street Journal), नीतिनिर्धारक

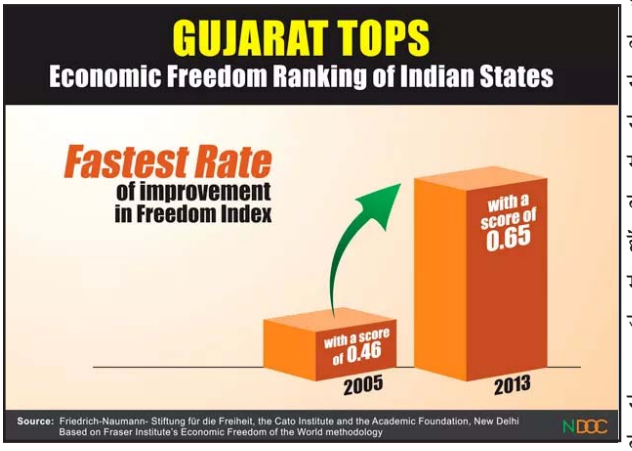

संगठन लेगाटम इंस्टीट्यूट से लेकर टाइम पत्रिका, तक और के लिए और भारत के एसोचैम (ASSOCHAM) और इंडिया टुडे (India Today) सहित कई अन्य संगठनों और समूहों के बीच से गुजरात के विकास की सर्वत्र प्रशंसा हुई है।

प्रगति के इन शानदार ऊंचाइयों को एक मजबूत प्रोत्साहन देना एक ठोस विजन है, गुजरात का हर नागरिक राज्य के विकास यात्रा में जुड़ा हुआ है यह सुनिश्चित करना एक मिशन है। यह राज्य के मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की दूरदर्शिता है जिसने पिछले 13 वर्षों में राज्य को विकास का एक मजबूत इंजन बना दिया है।

जहां तक आर्थिक स्वतंत्रता का संबंध है, श्री नरेन्द्र मोदी का एक बहुत स्पष्ट विजन है जिसकी दूर-दराज तक व्यापक सराहना की गई है। इकानॉमिक टाइम्स (The Economic Times) को दिए गए पिछले एक साक्षात्कार में हुए श्री मोदी ने साफ कहा कि सरकार का काम व्यापार करना नहीं है। वह सरकार की भूमिका की कल्पना हर संभव तरीके से विकास को प्रोत्साहित करने में मदद करने, और एक सुविधा प्रदाता के रूप में करते है। श्री मोदी यह भी बताया कि कैसे गुजरात में नौकरशाहों और राजनेताओं के हाथ गर्म करने का व्यापार नहीं होता है- यहाँ नीतियों में सुसंगतता है जो कि पर्याप्त है।

उन्होंने अपने रुख को छोटी सी बात में समझाया - "कोई लालफीताशाही नहीं, निवेशकों के प्रति मेरी नीति केवल लाल कालीन (रेड-कारपेट) बिछाने की है।"

आज जब मित्रवादी पूंजीवाद और नीतियों की अशक्तता ने राष्ट्र की गति को रोक रखा है उस समय गुजरात ताजा हवा के एक झोंके के रूप में सामने आता है।

श्री मोदी ने कई अवसरों पर खुद कहा कि उनके कोई बेटा या दामाद तो है नहीं तो वह पैसा किसके लिए जमा करेंगे? उसकी चौकन्नी निगाहों के तहत पहले जो पैसा मुट्ठीभर बिचौलियों की जेब को समृद्ध बनाने में इस्तेमाल होता था वही पैसा अब राज्य के विकास के लिए उपयोग किया जा रहा है। इस प्रकार जहाँ एक ओर विकास करने और कुछ नया करने की स्वतंत्रता है, वहीं दूसरी और विकास का फल गुजरात के आम लोगों तक पहुंच रहा है।

गुजरात के विकास का बल - गुजरात के 6 करोड़ लोग!

कई अवसरों पर श्री मोदी ने यह सवाल पूछा है कि गुजरात में विकास का जिम्मेदार किसे ठहराया जा सकता है और हर बार वह स्वयं तुरंत जवाब देते हैं . गुजरात के 6 करोड़ लोग! राज्य में पिछले 13 वर्षों में देखा गया विकास 6 करोड़ गुजरातियों की मेहनत और पसीने की खुशबू लिए हुए है। राज्य के लोगों ने राज्य को हर एक पल प्रगति की नई ऊंचाइयों तक ले जाने के लिए अद्‌भुत दृढ़ संकल्प , उत्साह और प्रतिबद्धता दिखाई है।

हाल ही में, एशिया की प्रमुख ब्रोकरेज हाउस सीएलएसए ने गुजरात को भारत में सबसे तेजी से बढ़ता राज्य कहा है और इसके विकास के मॉडल को अद्वितीय बताया है। इसने कृषि और उद्योग के क्षेत्र में गुजरात की सफलता की सराहना की है और विशेष रूप से राज्य में निवेश आकर्षित करने के लिए सरकार की नीतियों की प्रशंसा की है।

सीएलएसए ने इस बात का उल्लेख किया है कि गुजरात के विकास की विशेषता इसकी केंद्रीय फंड पर कम निर्भरता है। यह तथ्य श्री मोदी की उस बात को सत्य साबित करता है कि- ''गुजरात का विकास गुजरात के लोगों की वजह से है, कोई और राज्य के विकास का काल्पनिक श्रेय नहीं ले सकता है।''

गुजरात के विकास के बारे में ऐसे प्रोत्साहनपूर्ण शब्दों को सुनना अच्छा लगता है। इससे लोगों को कड़ी मेहनत कर प्रगति की अभूतपूर्ण ऊंचाइयों को छूने की प्रेरणा मिलेगी, जिसका मूलमंत्र होगा 'सबका साथ, सबका विकास (सामूहिक प्रयास, समावेशी विकास)'।■

हेण्डरसन रिपोर्ट ने खोली नेहरू की गलतियों की रिपोर्ट

✍ हमारे संवाददाता द्वारा

1962 चीन-भारत युद्ध पर हेण्डरसन ब्रुक्स की वर्गीकृत पुस्तक सामने आई जिसमें तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की 'त्रुटिपूर्ण' 'फारवर्ड पॉलिसी' और आर्मी नेतृत्व पर दोष मढ़ा गया है जिसके कारण देश को अपमानपूर्ण पराजय का सामना करना पड़ा था। इसके कारण परेशान हाल कांग्रेसनीत यूपीए सरकार के घावों पर और अधिक नमक छिड़का गया है।

रिपोर्ट के अनुसार तत्कालीन प्रधानमंत्री के राजनीतिक नेतृत्व और उच्च सैन्य अधिकारियों पर 15 दिन चली 1962 के युद्ध में पराजय की जिम्मेदारी डाली गई है। नई दिल्ली ने बड़ी सक्रियता से उन क्षेत्रों में 'फारवर्ड पॉलिसी' अपनाने का काम किया जिन पर चीन अपना दावा कर रहा था और उन क्षेत्रों में भरपूर गश्त लगाई जिससे युद्ध के अवसर पैदा हो गए। रिपोर्ट में कहा है कि यह कार्रवाई इस गलत धारणा के कारण हुई कि चीन सैन्य बल इस्तेमाल नहीं करेगा। किन्तु, रिपोर्ट में कहा है कि भारत के पास इस प्रकार के आप्रेशन को सहने की ताकत नहीं थी।

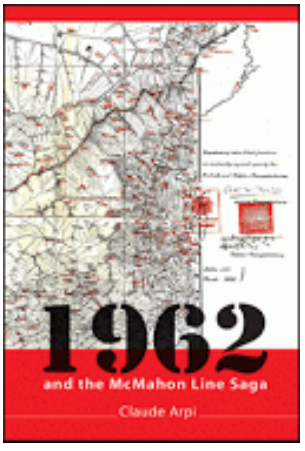

हेण्डरसन ब्रुक्स रिपोर्ट में यह अभूतपूर्व रहस्योद्घाटन किया गया है। रिटायर्ड ब्रिटिश जर्नलिस्ट नेवीली मैक्सवैल, जो अब आस्ट्रेलिया में बस गए हैं, ने अब इस 'उच्च गोपनीयता' दस्तावेज का एक बहुत बड़ा भाग इंटरनेट पर डाल दिया है जिससे भारत में एक बड़ा राजनैतिक तूफान खड़ा हुआ है।

आर्मी के तत्कालीन मेजर जनरल हेण्डरसन ब्रुक्स और ब्रिगेडियर भगत को 1962 में हुई पराजय की खामियों और कमजोरियों के बारे में रिपोर्ट प्रस्तुत करने को कहा गया था। इन दोनों अधिकारियों ने 1963 में विस्तृत रिपोर्ट पेश की किन्तु, जो तब से अभी तक गोपनीय बना कर रखी गई थी जबकि लोगों ने बार-बार इस रिपोर्ट को सार्वजनिक करने का आग्रह कर ही रही थी।

मैक्सवैल ने इस रिपोर्ट के 126 पृष्ठ इंटरनेट पर डाले, जिसमें कहा गया है कि तत्कालीन राजनैतिक और सैन्य नेतृत्व चीनियों के इरादों का गलत भांपा और सोचा कि चीन शत्रुता नहीं बढ़ाएगा जब कि भारतीय सैन्य शक्ति ने ठीक 'इसके विपरीत' बात सोची थी।

उच्चस्तरीय विभिन्न बैठकों के बारे में बात की गई है, जिसमें एक बैठक मे नेहरू, तत्कालीन इण्टेलीजेंस ब्यूरो डायरेक्टर ने भाग लिया था और उनका

मे.ज. हैण्डरसन ब्रुक्स

विचार था कि चीन का भारत की चौकियों के प्रति ताकत इस्तेमाल करने की संभावना नहीं है जबकि वास्तव में ऐसा करने की स्थिति में था। समीक्षा में लद्दाख में चीनी दावों को नजरअंदाज करते हुए फारवर्ड पॉलिसी अपनाई गई। रिपोर्ट में आगे कहा है कि यदि आर्मी हैडक्वार्टर ऐसी स्थिति से उभरी घटनाओं का सही आकलन किया होता और 'नेफा' से इसे जोड़ा होता तो युद्ध की स्थिति पैदा तब तक नहीं होती जब तक हम दोनों क्षेत्रों में बेहतर तैयारी न कर लेते।

रिपोर्ट में आगे कहा है कि इससे बड़ी बात यह है कि आर्मी ने पश्चिमी कमांड की उस चिंता पर भी ध्यान नहीं दिया जिसमें कहा गया था कि हमारे पास इस नीति को कार्यान्वित करने की तैयारी नहीं है और कहा कि यदि शत्रुता

का सामना करना पड़ा तो 'हमारी बुरी तरह पराजय' होगी, परन्तु आर्मी अपने ही विश्वास पर अड़ा रहा कि चीनी आर्मी किसी बड़े स्तर पर शत्रुता मोल नहीं लेगी, जो एक गलत अवधारणा बनी और चीन ने हमला करके अरूणाचल प्रदेश और लद्दाख के एक बड़े भाग पर कब्जा कर लिया। इस रिपोर्ट में कहा है कि जनरल स्टॉफ ब्रांच आर्मी हैडक्वार्टर्स ने पश्चिमी कमांड की चेतावनी पर ध्यान नहीं दिया, जो चीनी प्रतिक्रिया के गलत आकलन के कारण हुई और साथ ही आत्मसंतुष्टि का भाव बना रहा जिसके कारण ऐसा हुआ।

रिपोर्ट में आगे कहा है कि आर्मी हैडक्वार्टर्स ने फारवर्ड पॉलिसी भी कार्यान्वित करते समय सैन्य कमजोरी सम्बन्धी पश्चिमी कमांड की चेतावनी की उपेक्षा की। वास्तव में, पश्चिमी कमांड ने 15 अगस्त 1962 को जमीनी स्थिति का पुनरावलोकन करते हुए एक दीर्घकालीन और अल्पकालीन सिफारिशें की थीं, जिन्हें दरकिनार कर दिया गया। यह समीक्षा फारवर्ड पॉलिसी किए जाने या न किए जाने के आधार पर युद्ध की संभावनाओं से नहीं जुड़ी थी, परन्तु इसके कार्यान्वयन से निश्चित ही युद्ध की संभावनाएं बढ़ गईं। यहां पर प्रमुख बात यही है कि क्या हम सैन्य रूप से इसे कार्यान्वयन करने की स्थिति में थे या नहीं?

इसमें कहा है कि हमने अपनी ताकत पर अपनी 'कमजोर' सैन्य स्थिति पर काम किया बल्कि यह मान कर चलते रहे कि चीनी प्रतिक्रिया करने पर विश्वास नहीं माना। इससे आगे कहा है कि यह सोचा भी नहीं गया कि सैन्य रूप से जरूरत स्टॉफ ने अपनी कमजोरियों और फार्वर्ड पॉलिसी के कार्यान्वयन पर सरकार को परामर्श नहीं दिया और तत्कालीन सेनाध्यक्ष बीएम कौल के कार्यो पर सवाल खड़े किए, जिन्होंने पराजय के बाद पॉलिसी बनाने की अपनी प्रमुख भूमिका को लेकर त्यागपत्र दे दिया था।

हेण्डरसन ब्रुक्स रिपोर्ट की प्रमुख बातें

- 'फावर्ड पॉलिसी' पर सरकार के निर्णय की पृष्ठभूमि का पता ही नहीं है। न ही फार्वर्ड पॉलिसी की उपलब्धता के बारे में कि गाइडलाइन निर्धारित करने वाली बैठक के कार्यवृत्त हैं। 2 नवम्बर 1961 को प्रधानमंत्री कार्यालय की बैठक में रक्षामंत्री, विदेश सचिव, सेनाध्यक्ष और इंटेलीजेंस ब्यूरो डायरेक्टर (डीआईबी) शामिल हुए थे, जिससे लगता यह है कि डीआईबी का विचार था कि चीनी नई चौकियों की स्थापना पर प्रतिक्रिया नहीं करेंगे और वे युद्ध करने की स्थिति में भी हमारी किसी चौकी पर हमला नहीं बोलेंगे।
- यह वार्षिक आर्मी इंटेलीजेंस रिव्यू-चीन-तिब्बत 1959 के विपरीत थी, जिससे यह स्पष्ट संकेत मिलता है कि चीनी सेना अनेक कब्जे में किसी क्षेत्र को वापस लेने के प्रयास में ताकत का इस्तेमाल करेगी।
- चीनियों ने लद्दाख में उत्कृष्ट ढंग से बनाई सड़कों के साथ अपनी सुसज्जित आर्मी को तैनात किया हुआ था। किन्तु, हम बिना किसी शस्त्रों के बिखेर हुए थे। और विभिन्न क्षेत्रों के साथ भी हमारी संचार व्यवस्था खराब थी। इस प्रकार शत्रुता होने पर हमारी पराजय तय थी।
- पश्चिमी कमांड ने आर्मी की तैयारी पर वास्तविक तस्वीर सामने रखी थी। परन्तु जनरल स्टाफ ब्रांच आर्मी हैडक्वार्टर्स ने पश्चिमी कमांड की चेतावनी पर ध्यान ही नहीं दिया, जिसके कारण चीनी प्रतिक्रिया पर एक गलत आकलन किया गया और साथ ही आत्मतोष के भाव से यह सब कुछ हुआ। ■

1962 चीन-भारत युद्ध पर वर्गीकृत सच्चाई को छुपाने का कांग्रेस पर आरोप

भारतीय जनता पार्टी ने कांग्रेस पर 1962 के भारत-चीन युद्ध पर सच 'छुपाने' का आरोप लगाते हुए मांग की है कि इसे सार्वजनिक किया जाए। भाजपा ने कहा है कि यूपीए सरकार भारत-चीन युद्ध रिपोर्ट वर्गीकृत को छुपाने का प्रयास क्यों कर रही है?

यही अवसर है जब वर्तमान तथा भावी पीढ़ियों को पता लग सके और बहस हो ताकि पता लगा सके कि भारत की सुरक्षा के लिए किसने काम किया, जवाहर लाल नेहरू थे या सरदार पटेल! राज्य सभा में उप-नेता श्री रविशंकर प्रसाद ने इस बात का उल्लेख किया है।

लोकसभा में भाजपा अध्यक्ष राजनाथ सिंह ने अनुरोध किया है कि हेण्डरसन ब्रुक्स रिपोर्ट को अवर्गीत किया जाए।

रक्षा मंत्री ए.के. एंटनी ने संसद में इसके उत्तर में कहा है कि रिपोर्ट को सार्वजनिक नहीं किया जा सकता है क्योंकि इसमें संवेदनशील सूचनाएं हैं तथा साथ ही रिपोर्ट के विषयों का सम्बन्ध वर्तमान आप्रेशनल मूल्यों से जुड़ा है। ■

हैण्डरसन ब्रुक्स रिपोर्ट

क्या हम 1962 के युद्ध से सबक सीखने को तैयार हैं?

अरुण जेटली

नेवीली मैक्सवैल लिखित पुस्तक 'इण्डिया चीन वार' में हैण्डरसन ब्रुक्स रिपोर्ट के अधिकांश भागों में बहुत कुछ अंश उद्धृत किए गए हैं जबकि वह भारत की सैन्य नीति के आलोचक रहे हैं। लेफ्टिनेंट जनरल टीवी हैण्डरसन और ब्रिगेडियर भगत ने इस रिपोर्ट को तैयार किया है। ये दोनों अधिकारी 1962 में सैन्य चीन के साथ हुए सैन्य युद्ध पर भारत की खामियों की जांच कर रहे थे। पिछले 52 वर्षों में रिपोर्ट को अत्यंत गोपनीय बनाए रखा गया था। पिछले 52 वर्षों में सभी सरकारों ने इस दस्तावेज की सार्वजनिक करने की आवश्यकता महसूस नहीं हुई। इससे पुरातत्वीय रिकार्डों के वर्गीकरण के बारे में हमारे सामने प्रश्न उभर कर भी आता है। क्या पुरातत्वीय रिकार्डों को आम जनता से अनिश्चित काल तक दूर रखना आवश्यक है? यदि कोई ऐसा दस्तावेज है जो आंतरिक सुरक्षा से सम्बन्धित होता है तो कुछ समय तक उसे गोपनीय बनाए रखने से लोकहित की पूर्ति हो सकती है। परन्तु, ऐसे दस्तावेजों को अनिश्चित काल तक 'उच्चतम गोपनीय' बनाए रखना लोकहित की कसौटी पर खरा नहीं उतरता है। किसी भी राष्ट्र को अपनी पुरानी गलतियों से सबक सीखने का हक होता है। दीर्घकाल तक भविष्य में ऐसे दस्तावेजों की सुरक्षा प्रासंगिकता हानिकारक ही सिद्ध हो सकती है। प्रत्येक समाज को पुरानी गलतियों से सबक सीखना उसका कर्तव्य बन जाता है। मेरी राय में अर्न्तदृष्टि की बुद्धिमत्ता यही रहती है कि रिपोर्ट के विषय को कुछ दशक पूर्व ही सार्वजनिक कर देना चाहिए था।

जो बात सार्वजनिक की गई है, वह रिपोर्ट के भाग–I में उद्धृत है। मीडिया की रिपोर्ट से पता चलता है कि 112 से 167 तक के पृष्ठ अब भी लोगों के सामने नहीं आए हैं। क्या इसके पीछे यह कारण तो नहीं है कि इन पृष्ठों में ऐसी सामग्री रही है जो 1962 में सत्ता में बैठे लोगों को परेशान कर सकते हैं? प्रथम 111 पृष्ठ सार्वजनिक हुए हैं तो आवश्यक है कि शेष पृष्ठों को भी सार्वजनिक किया जाए। ऐसा न करने से सार्वजनिक लोगों पर अप्रामाणिक बातों का प्रभाव पड़ सकता है।

रिपोर्ट की विषयों से यह वैध प्रश्न भी लोगों के सामने आना आवश्यक हो जाता है। तत्कालीन सरकार की सैन्य रणनीति भी गम्भीरतापूर्वक प्रश्न चिह्न लगाती है। चीनी रवैये का खुफिया आकलन त्रुटिपूर्ण था। 'फार्वर्ड पोस्ट्स' बनाने में सैन्य रणनीति की आलोचना हुई है जिसके कारण चीनियों को आक्रमण करने का बहाना मिल गया। रिपोर्ट से यह भी पता चलता है कि तत्कालीन प्रधान मंत्री और आर्मी में उनके अपने चहते अधिकारी, दोनों ही ने अपने आकलन में गलतियां कीं। वास्तव में, प्रधानमंत्री के नजदीकी इन अधिकारियों के कारण देश को भारी कीमत चुकानी पड़ी। रिपोर्ट में जो कुछ लिखा गया है उससे पता चलता है कि सैन्य बलों की तैयारी एकदम विकृत थी। क्या वास्तव में 1962 में हिमालय युद्ध की सरकार की वह भूल नेहरू सरकार की भूल नहीं थी?

जो कुछ भी इस पुस्तक की रिपोर्ट के माध्यम से हमारे सामने आया है, क्या हमें उससे सबक नहीं सीखना चाहिए? हम अपनी सैन्य रणनीति में कितना तैयार हैं? आज के संकेतों से यही पता चलता है कि हमारी रक्षा खरीदारी को नुकसान हुआ है। इससे हमारे सैन्य बलों को नुकसान ही उठाना पड़ेगा जबकि वे पूरे विश्व में व्यवसायिक रूप से सर्वोत्कृष्ट हैं। क्या हम 1962 के युद्ध से सबक सीखने को तैयार हैं? ■

(लेखक राज्यसभा में विपक्ष के नेता हैं।)

भाजपा की सदस्यता ग्रहण करने के लिए लगा तांता...

देश में भाजपा के प्रधानमंत्री पद के प्रत्याशी श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में एक मजबूत और स्थिर सरकार बने, इसलिए खेल, राजनीति, फिल्म और साहित्य आदि सभी क्षेत्रों के विशिष्ट जन लगातार पार्टी की सदस्यता ग्रहण कर रहे हैं।

योजना आयोग के पूर्व सदस्य एन के सिंह हुए भाजपा में शामिल

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह की उपस्थिति में पूर्व प्रशासनिक अधिकारी, पूर्व राजस्व सलाहकार एवं योजना आयोग के पूर्व सदस्य श्री एन के सिंह ने भाजपा की सदस्यता ग्रहण की।

श्री सिंह के अतिरिक्त भाजपा में शामिल होने वाले प्रमुख सदस्यों में वरिष्ठ अधिवक्ता श्री आर एस गोस्वामी एवं डा. मोहम्मद एजाज इल्मी भी थे। श्री गोस्वामी दिल्ली बार कौंसिल के पूर्व चेयरमैन रह चुके हैं और वर्तमान में ये बार कौंसिल ऑफ इंडिया के सदस्य हैं। पेशे से चिकित्सक रहे डा. एजाज इल्मी जाने-माने राजनीतिक विश्लेषक भी हैं।

इस अवसर पर प्रसन्नता जाहिर करते हुए भाजपा अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने श्री एन के सिंह एवं अन्य शामिल होने वाले सदस्यों का स्वागत करते हुए विश्वास जताया कि आगामी लोकसभा चुनाव में भाजपा अपनी जीत का लक्ष्य आसानी से प्राप्त कर सकेगी।

इस अवसर पर भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री जेपी नड्डा, भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता डा. सुधांशु त्रिवेदी एवं प्रमुख समाजसेवी श्री मांगे राम शर्मा भी उपस्थिति थे।

भाजपा में शामिल हुए कांग्रेस सांसद सतपाल महाराज

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह की उपस्थिति में श्री सतपाल महाराज के नेतृत्व में हजारों कार्यकर्ताओं ने भाजपा की सदस्यता ग्रहण की। श्री सतपाल महाराज पूर्व में केन्द्रीय मंत्री रहे है और वर्तमान में उत्तराखण्ड (पौडी, गढवाल) से कांग्रेस के सांसद है।

इस अवसर पर श्री सतपाल महाराज ने कहा कि श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में अगली सरकार बनेगी और भारत को विश्व गुरू के रूप मे पुनर्स्थापित करेंगे।

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने श्री सतपाल महाराज का स्वागत करते हुए कहा कि श्री सतपाल महाराज जी एक जननेता हैं उनके भारतीय जनता पार्टी में शामिल होने से भाजपा के 272+ मिशन को सफल बनाने में बल मिलेगा।

भाजपा में शामिल हुए अगप नेता चन्द्रमोहन एवं हितेन्द्र नाथ गोस्वामी

गत 10 मार्च, 2014 को भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह की उपस्थिति में असम गण परिषद के पूर्व अध्यक्ष श्री चन्द्रमोहन पटवारी व वरिष्ठ असम गण परिषद के वरिष्ठ नेता श्री हितेन्द्र नाथ गोस्वामी के नेतृत्व में बड़ी संख्या में लोगों ने भाजपा की सदस्यता ग्रहण की।

श्री राजनाथ सिंह ने श्री चन्द्रमोहन पटवारी को भाजपा की केंद्रीय चुनाव अभियान समिति का सदस्य नियुक्त किया।

इस अवसर पर श्री एस.एस. आहलूवालिया, श्रीमति विजया चक्रवर्ती, श्री सर्वानंद सोनवाल समेत असम भाजपा के वरिष्ठ पदाधिकारी उपस्थित थे।

प्रख्यात पत्रकार एम.जे. अकबर ने भाजपा की सदस्यता ग्रहण की

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह व भाजपा महामंत्री श्री जे.पी. नड्डा की उपस्थिति में प्रख्यात पत्रकार एवं पूर्व सांसद, श्री एम.जे. अकबर ने भाजपा की सदस्यता ग्रहण की।

इस अवसर पर श्री राजनाथ सिंह ने श्री एम.जे. अकबर का स्वागत करते हुए कहा कि भाजपा में समाजेसवी, संत, सेवानिवृत्त अधिकारी, सैन्य अधिकारी, कलाकारों समेत समाज के विभिन्न वर्गों के लोग भाजपा की सदस्यता ग्रहण कर रहे हैं, इसी क्रम में आज पत्रकार जगत के हस्ताक्षर श्री एम.जे. अकबर ने भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ग्रहण की है।

नरेन्द्र ठाकुर हुए भाजपा में शामिल

श्री नरेन्द्र ठाकुर, जो पूर्व मंत्री स्व0 ठाकुर जगदेव चन्द के सपुत्र है, उन्होंने 24 मार्च को हमीरपुर में पूर्व मुख्यमंत्री प्रो0 प्रेम कुमार धूमल तथा पूर्व विधायिका श्रीमती उर्मिल

ठाकुर और पूर्व मंत्री प्रवीण शर्मा के समक्ष भारतीय जनता पार्टी में शामिल होने की घोषणा की।

पार्टी प्रवक्ता श्री गणेश दत्त ने बताया कि श्री नरेन्द्र ठाकुर लोकसभा तथा विधान सभा के लिये चुनाव लड़ चुके हैं। उन्होंने कहा कि श्री नरेन्द्र ठाकुर भारतीय जनता पार्टी के दिग्गज नेता पूर्व मंत्री एवं ठाकुर जगदेव चन्द के सपुत्र हैं तथा पेशे से वह नामी वकील हैं। श्री ठाकुर के भारतीय जनता पार्टी में शामिल होने से पार्टी को बहुत बल मिलेगा तथा श्री अनुराग ठाकुर हमीरपुर संसदीय क्षेत्र से भारी मतों से विजयी होंगे।

तमिलनाडु में 'महागठबंधन'

दक्षिणी राज्यों में अपनी स्थिति मजबूत करते हुए भारतीय जनता पार्टी ने तमिलनाडु की पांच क्षेत्रीय पार्टियों के साथ गठबंधन किया है। ये दल हैं- डीएमडीके, पीएमके, एमडीएमके, इंडिया जननायक काची और कोंगूनाडु मक्कत देसिया काची। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने इस गठबंधन की घोषणा 20 मार्च को चेन्नई में की।

श्री सिंह ने इस गठबंधन को तमिलनाडु और देश के लिए ऐतिहासिक बताया क्योंकि पांच दल राजग में साथ आए हैं। सहयोगी दलों के साथ संयुक्त संवाददाता सम्मेलन में श्री सिंह ने कहा कि राज्य की 39 लोकसभा सीटों में से डीएमडीके 14 सीटों पर चुनाव लड़ेगी जबकि पीएमके और भाजपा 8-8 सीटों पर चुनाव लड़ेगी। एमडीएमके को सात सीटें दी गई हैं जबकि आईजेके और केएमडीके को एक सीट मिली है।■

भाजपा में शामिल हुए...

- श्री गेगांग अपांग, पूर्व मुख्यमंत्री, अरुणाचल प्रदेश
- श्री बप्पी लाहिरी, जाने-माने संगीतकार
- श्री आर. के. सिंह, पूर्व गृहसचिव
- श्री आर. एस. पांडेय, पूर्व पेट्रोलियम सचिव
- श्री हरदीप पुरी, सेवानिवृत्त कूटनीतिक अधिकारी
- श्री सुनील शास्त्री, पूर्व प्रधानमंत्री स्व. लालबहादुर शास्त्री के सुपुत्र
- श्री धरम सिंह, पूर्व रेलवे अधिकारी
- श्री राजेश वर्मा, पूर्व बसपा सांसद
- श्री कौशल किशोर, सपा नेता
- श्री धर्मेंद्र सिंह, समाजवादी नेता राजनारायण के पोते
- श्रीमती पुतुल सिंह, निर्दलीय सांसद, बांका (बिहार)
- श्री ओमप्रकाश यादव, निर्दलीय सांसद, सीवान (बिहार)
- श्रीमती ओ लंधोनी देवी, मणिपुर के मुख्यमंत्री श्री ओ इबोबी सिंह की पत्नी
- श्री निशिकांत ठाकुर, वरिष्ठ पत्रकार
- श्री सुशील सिंह, सांसद, औरंगाबाद (बिहार)
- श्री जगदम्बिका पाल, कांग्रेस नेता, पूर्व मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश
- श्री राजू श्रीवास्तव, जाने-माने हास्य कलाकार
- सुश्री हीना गावित, राकांपा नेत्री
- श्री चंद्र मोहन पटोवारी, अगप नेता
- श्री सतपाल महाराज, कांग्रेस सांसद, पौड़ी (उत्तराखंड)
- श्री सत्यपाल सिंह, पूर्व पुलिस आयुक्त, मुंबई
- श्री श्रीरामुलु, राजनेता, कर्नाटक
- सुश्री तेजस्विनी, पूर्व कांग्रेस सांसद, कर्नाटक

पाल्देन वांचुक बने सिक्किम प्रदेश भाजपाध्यक्ष

गत 15 मार्च को राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने श्री पाल्देन वांचुक (वर्तमान उपाध्यक्ष) को सिक्किम प्रदेश का प्रदेशाध्यक्ष तथा श्री हरीराम प्रधान को सिक्किम प्रदेश का चुनाव प्रबंधन समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया है।

गोरखा जनमुक्ति मोर्चा ने आगामी लोकसभा चुनाव में दिया भाजपा को मर्थन

गत 10 मार्च, 2014 को गोरखा जनमुक्ति मोर्चा के अध्यक्ष श्री विमल गुरंग, महामंत्री श्री विनय तमांग एवं श्री राजू प्रधान भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह जी से मिले और भाजपा को आगामी लोकसभा चुनाव में समर्थन की घोषणा की।

राजमोहन कहते हैं, शायद महात्मा सही नहीं थे

लालकृष्ण आडवाणी

लॉगों का मेरा दूसरा संग्रह 'माई टेक' शीर्षक से दिसम्बर, 2013 में लोकार्पित हुआ था, जिसमें काफी ब्लॉग सरदार पटेल, उनके द्वारा देसी रियासतों के उल्लेखनीय विलीनीकरण कार्य, और हैदराबाद के निजाम द्वारा भारतीय संघ में शामिल न होने के समझौते पर हस्ताक्षर न करने पर उनके द्वारा अपनाए गए तरीके जिससे निजाम को मुंह की खानी पड़ी, जैसे विषयों पर केंद्रित थे।

अधिकांश लोगों को शायद पता नहीं कि प्रधानमंत्री पंडित नेहरु निजाम के विरुद्ध सैन्य कार्रवाई करने के पक्ष में कतई नहीं थे और जम्मू एवं कश्मीर की तरह वह हैदराबाद के मुद्दे को भी संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद को सौंपना चाहते थे!

यदि कोई भी उन प्रारम्भिक वर्षो के इतिहास का विश्लेषण करेगा तो निश्चित ही यह महसूस करेगा कि गांधी ने पण्डित नेहरु के बजाय यदि सरदार पटेल को स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री के रूप में चुना होता तो उन प्रारम्भिक वर्षो का इतिहास कुछ अलग ही होता।

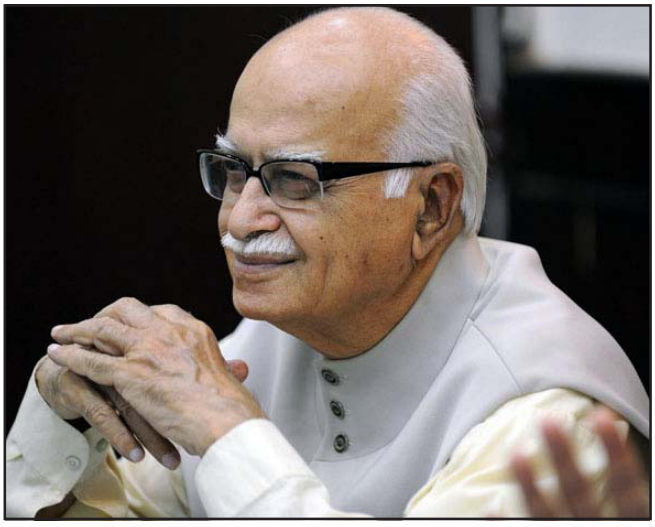

राजमोहन गांधी द्वारा लिखित सरदार पटेल की उत्कृष्ट जीवनी इन दिनों पढ़ते हुए मुझे लगा कि राजमोहन ने अपनी प्रस्तावना में जो कहा है वह महत्वपूर्ण है। प्रस्तावना की शुरुआत राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद की इन टिप्पणियों से शुरु होती है कि देश, विशेष रूप से सरकार ने सरदार के साथ न्याय नहीं किया। राजमोहन लिखते हैं:

"स्वतंत्र भारत संस्थान को वैधानिकता और शक्ति, मुख्य तौर पर कहा जाए तो गांधी, नेहरु और पटेल-इन तीनों व्यक्तियों के परिश्रम से मिली। लेकिन नेहरु के मामले में उनके योगदान को चाटुकारितापूर्ण ढंग से स्वीकारा गया है, गांधी के योगदान कर्तव्यपरायणता के साथ परन्तु पटेल के योगदान को स्वीकार करने में कंजूसी बरती गई है। राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद 13 मई, 1959 को अपनी डायरी में लिखते हैं, "आज एक ऐसा भारत है जिसके बारे में सोचना और बात करना व्यापक रुप से सरदार पटेल की

31 अक्टूबर, 1975 यानी आपातकाल घोषित होने के चार महीने बाद पटेल की शताब्दी थी जिसे सरकारी तौर और शेष प्रशासनिक तंत्र द्वारा भारत में उपेक्षित किया गया और तब से आधुनिक भारत के उल्लेखनीय इस एक निर्माता के जीवन पर पर्दा डाल दिया गया जो कभी कभार या आंशिक रूप से उठाया जाता है। इस खाई को भरने और वर्तमान पीढ़ी को वल्लभभाई पटेल के जीवन से परिचित कराना मेरा सौभाग्य है। यह किसी एक परिपूर्ण व्यक्ति का जीवन न ही है और न ही मैंने चाहा और नहीं प्रयास किया कि पटेल की कमियों को छिपाऊं परन्तु उनके जीवन को जानने के बाद कुछ लोग कम से कम महसूस कर सकते हैं कि पटेल एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें अच्छे समय में कृतज्ञतापूर्वक याद किया जाएगा और जब हताशा या निराशा प्रतीत होगी तब उन्हें भारत की संभावनाओं के कीर्तिमान के रूप में याद किया जाएगा।

शासन कुशलता और मजबूत प्रशासन के चलते हैं।'' प्रसाद आगे लिखते हैं, "फिर भी हम उन्हें उपेक्षित करने को तत्पर रहते हैं।'' 1989 में जवाहरलाल की जन्मशताब्दी के अवसर पर हजारों समारोह, स्मृति में टीवी धारावाहिकों, उत्सव और अनेकों अन्य मंचों के माध्यम से मनाई गई। 31 अक्टूबर, 1975 यानी आपातकाल घोषित होने के चार महीने बाद पटेल की शताब्दी थी जिसे सरकारी तौर और शेष प्रशासनिक तंत्र द्वारा भारत में उपेक्षित किया गया और तब से आधुनिक भारत के उल्लेखनीय इस एक निर्माता के जीवन पर पर्दा डाल दिया गया जो कभी कभार या आंशिक रूप से उठाया जाता है।

इस खाई को भरने और वर्तमान पीढ़ी को वल्लभभाई पटेल के जीवन से परिचित कराना मेरा सौभाग्य है। यह किसी एक परिपूर्ण व्यक्ति का जीवन न ही है और न ही मैंने चाहा और नहीं प्रयास किया कि पटेल की कमियों को छिपाऊं परन्तु उनके जीवन को जानने के बाद कुछ लोग कम से कम महसूस कर सकते हैं कि पटेल एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें अच्छे समय में कृतज्ञतापूर्वक याद किया जाएगा और जब हताशा या निराशा प्रतीत होगी तब उन्हें भारत की संभावनाओं के कीर्तिमान के रूप में याद किया जाएगा।

स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री को चुनते समय क्या गांधी ने पटेल के साथ अन्याय किया या नहीं, यह प्रश्न समय-समय पर उठता रहता है। इसका उत्तर मेरी जांच से इन पृष्ठों पर रहस्योद्घाटित रूप में मिलेगा। लेकिन कुछ लोगों के मतानुसार महात्मा द्वारा वल्लभभाई के प्रति न्याय न किया जाना ही उनके जीवन के बारे में मेरे इसे लिखने हेतु एक कारण है। यदि कोई एक गलती या पाप हो गया है तो कुछ प्रायश्चित महात्मा के पोते द्वारा करना उचित ही होगा। इसके अलावा, मैं अपने राष्ट्र के एक संस्थापक के प्रति एक नागरिक के कर्तव्य का पालन करना चाहता हूं।

स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री को चुनते समय क्या गांधी ने पटेल के साथ अन्याय किया या नहीं, यह प्रश्न समय-समय पर उठता रहता है। इसका उत्तर मेरी जांच से इन पृष्ठों पर रहस्योद्घाटित रूप में मिलेगा। लेकिन कुछ लोगों के मतानुसार महात्मा द्वारा वल्लभभाई के प्रति न्याय न किया जाना ही उनके जीवन के बारे में मेरे इसे लिखने हेतु एक कारण है। यदि कोई एक गलती या पाप हो गया है तो कुछ प्रायश्चित महात्मा के पोते द्वारा करना उचित ही होगा।

मैं अपना एक निजी सम्पर्क उद्धृत करने से रोक नहीं पा रहा भले ही यह हल्के किस्म का है और तब का है जब मैं 14 वर्ष का था। 1949 में किसी समय, अपने माता-पिता के साथ मुझे याद है कि मैं 1, औरंगजेब रोड-नई दिल्ली में सरदार का निवास-गया वहां मैंने किसी तरह पाया कि मैं लॉन में उनके साथ अकेला बैठा था। हम आमने-सामने की कुर्सियों पर बैठे और करीब 6 फीट दूर थे। वह मुझे देखकर अपने होठों तथा आंखों से मुस्करा रहे थे - हंसी-मजाक और मुझे परख रहे थे। मैं असहज महसूस कर रहा था और उन पर से अपनी आंखें हटाना चाहता था लेकिन नहीं कर पाया-मेरा अनुमान है कि इसमें मेरी ऐंठ आड़े आयी। तब मुझे और निकटता से उनकी आंखों में देखने को मिला और मैंने उनमें स्नेह पाया। उसी क्षण से मैं जानता हूं कि लौह पुरुष के पास एक स्नेही हृदय था।

गांधीजी के पौत्र, राजमोहन ने वास्तव में खुलकर यह कहा है कि संभवतया गांधीजी प्रधानमंत्री पद के लिए किए गए निर्णय में सही नहीं थे और, इसलिए उनके एक पौत्र द्वारा एक किस्म का प्रायश्चित करना बनता है, और इससे न केवल उनकी महानता और उदारता प्रकट होती है अपितु इससे इस सामान्य मत की भी पुष्टि होती है कि सरदार ज्यादा उपयुक्त पसंद होते।

टेलपीस (पश्च्यलेख)

महात्माजी की हत्या को लेकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विरूद्ध कांग्रेस द्वारा चलाए जा रहे घृणित अभियान को राजमोहन गांधी की पुस्तक प्रभावी ढंग से झुठलाती है।

पृष्ठ 272 पर लेखक ने 27.02.1948 को सरदार पटेल द्वारा जवाहरलाल नेहरू को लिखे को उद्धृत किया है जो निम्न है:

"बापू हत्याकाण्ड में चल रही जांच की प्रगति की रिपोर्ट मैं स्वयं प्रतिदिन ले रहा हूं। शाम का मेरा अधिकांश समय संजीवी (इंटेलीजेंस के मुखिया और दिल्ली पुलिस के आई.जी.) के साथ पूरे दिन की प्रगति और उठने वाले मुद्दों पर निर्देश देने में लग रहा है।

सभी आरोपियों ने लम्बे और विस्तृत बयान दिये हैं। इन बयानों से साफ होता है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ किसी भी रूप में इसमें शामिल नहीं था। ■

छत्तीसगढ़ में माओवादियों का फिर से हमला

✍ अरुण जेटली

माओवादियों ने फिर से हमला बोल दिया है। सीआरपीएफ और छत्तीसगढ़ के अनेक पुलिसकर्मी मारे गए हैं। वे भारत की रक्षा के लिए शहीद हो गए।

भारत के सामने माओवादियों के यह हमले एक गम्भीर समस्या बन कर सामने खड़े हैं। मध्य भारत के आदिवासी केन्द्र के अनेक जिलों में माओवादियों का नियंत्रण और प्रभाव है। ये क्षेत्र माओवादियों के प्रभुत्ताधीन बने हुए हैं। इन क्षेत्रों में एक औसत नागरिक घबराया रहता है। इन क्षेत्रों में जिला प्रशासन का हुकुम चल ही नहीं पाता है। यहां माओवादी ही कर इकट्ठा करते हैं। हर गांव में उनके वेतनधारी वालण्टियर बने हुए हैं। उनके पास भारी मात्रा में हथियार होते हैं। माओवादी कोई भ्रमित सिद्धांतकारी नहीं हैं। न ही वे सामाजिक सुधारक हैं। माओवाद गरीबी उन्मूलन योजना में भी विश्वास नहीं रखती है। यह ऐसा सैद्धांतिक आंदोलन है जो भारत की संसदीय लोकतंत्र को उखाड़ फेंकना चाहता है और इसके कथन पर सैद्धांतिक तानाशाही लाना चाहता है। माओवादी विचारधारा के अनुसार यहां न लोकतंत्र रहेगा, न कोई स्वतंत्रता होगी, न जीवन और न स्वतंत्रता का अधिकार होगा, कोई कायदा-कानून नहीं चलेगा और न ही बोलने की सुविधा होगी। लोगों को आतंक में जीना होगा जिसे पूरे विश्व ने सैद्धांतिक तानाशाही को देखा है।

आखिर हम कैसे इस माओवाद का सामना कर सकते हैं? क्या हमें उस सिद्धांत को अपनाना होगा जो कुछ रक्तपात पीड़ितों ने हमारे सामने रखी है कि माओवादी दोनों में केवल माओवाद के खतरे से निपटा जा सकता है जब हम माओवादी क्षेत्रों में आर्थिक प्रगति कर सकें। यह बात तो आधी भी सच नहीं है। किसी भी सरकार के लिए माओवादी प्रभावित क्षेत्रों में प्रवेश करने के लिए शांति की बहाली प्रथम शर्त है। बारूदी सुरंगों को खत्म करना आवश्यक है। प्राइवेट सेनाओं के नियंत्रण में हथियारों को खत्म करना आवश्यक है। औसत नागरिक से लूट-खसोट को समाप्त करना होगा। अन्यथा किस प्रकार जिला प्रशासन या पीडब्ल्यू ठेकेदार इन क्षेत्रों में प्रवेश कर सकेंगे और स्कूल, निर्माण, कालेज, अस्पताल, पंचायत भवन आदि जैसे कार्यों की शुरूआत कर पाएंगे।

इन क्षेत्रों में हथियारों और विस्फोटों के साधनों को खत्म करना होगा। माओवादियों को ये हथियार या तो सीमापार से तस्करी अथवा पुलिस बलों से लूट में प्राप्त होते हैं। माओवादियों का विश्वास है कि शत्रुओं का शस्त्रागार माओवादियों का शस्त्रागार है। इस विषय में शत्रु राज्य होता है या पुलिस होती है।

आखिर कब तक इस प्रकार की हिंसा में भारत के आम नागरिक और रक्षा बलों का संहार होता रहेगा? कब तक हम इन क्षेत्रों में विकास एजेण्डे की अवरूद्ध बनाए रखेंगे? क्या हम उन्हें आदिवासी जनसंख्या के लाभ के लिए बनाई गई इमारतों और सम्पत्तियों को ध्वस्त करने देते रहेंगे? हमें एक दम साफ होना होगा कि राष्ट्रीय संसाधनों पर पहला अधिकार आदिवासियों का है।

हमें आदिवासियों से माओवादियों को जुदा रखना होगा। माओवाद के खिलाफ युद्ध कभी भी अधूरा युद्ध नहीं हो सकता है। हम पूरी ताकत से भारतीय राज्य की रक्षा करने के लिए सामना करना ही होगा। ■

(लेखक राज्यसभा में विपक्ष के नेता हैं।)

छत्तीसगढ़ में नक्सल हमला

गत 11 मार्च को एक बार फिर से छत्तीसगढ़ के सुखमा जिले में नक्सल हमला हुआ। छत्तीसगढ़ के सुखमा जिले 19 मार्च को घात लगा कर माओवादियों ने पन्द्रह रक्षा बलों की हत्या कर दी। इनमें एक नागरिक विक्रम निषाद भी मारा गया, जबकि इसी क्षेत्र में तीन व्यक्ति घायल हो गए जब माओवादियों ने घात लगाकर पिछले मई माह में 27 व्यक्तियों की हत्या कर दी। पिछले पखवाड़े में सुरक्षा कर्मियों पर यह दूसरा बड़ा हमला था। 28 फरवरी को दंतेवाड़ा में माओवादी हमले में पांच सुरक्षाकर्मियों के प्राण चले गए थे। ■

नीतिविहीन राजनीति

✍ हृदयनारायण दीक्षित

राजनीति नीतिविहीन हो रही है। विचारहीन और निर्वस्त्र। राज और 'नीति' का जोड़ ही राजनीति है। नीति यहां राष्ट्रनीति है। लोकमंगल अभीप्सु कर्मप्रेरणा है। नीति कर्म बनती है और राज उसका फल। चुनाव नीति आधारित जनशिक्षण का अवसर होते हैं। भारतीय मतदाता 15 लोकसभाएं चुन चुके हैं। मतदाता जागरूक हुए हैं, लेकिन दलतंत्र लगातार नीतिविहीन। यहां विचार आधारित अभियान हैं ही नहीं। चेहरे ही चेहरे हैं। इन चेहरों में ज्यादातर वर्तमान या निवर्तमान मुख्यमंत्री हैं। नरेंद्र मोदी, नीतीश कुमार, जयललिता और ममता सम्प्रति मुख्यमंत्री हैं। मुलायम सिंह उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री व केंद्रीय मंत्री रहे हैं। सपा के प्रमुख मुलायम सभी दावेदारों में वरिष्ठ हैं। राहुल गांधी कांग्रेस का चेहरा हैं। उन्हें सरकार चलाने का कोई अनुभव नहीं। बेशक सरकार हड़काने का अनुभव है, लेकिन मनमोहन सरकार की उपलब्धियां गिनाना या नाकामियों पर सफाई देना उनकी मजबूरी है। कथित विचार प्रतिबद्धता वाले वामदल भी इन्हीं चेहरों पर दांव लगाने के लिए विवश हैं। मतदाता संसदीय उम्मीदवारों के लिए ही नोटा का बटन दबा सकते हैं। प्रधानमंत्री तय कर लिए गए हैं। प्रधानमंत्री चुनने का परंपरागत अधिकार बहुमत प्राप्त संसदीय दल को भी नहीं है।

बड़ा अजब-गजब है यह चुनाव। भारत को स्वाधीन हुए 67 बरस हो गए। कोई भी दल टिकट वितरण की सुसंगत प्रणाली नहीं बना पाया। भाजपा कार्यकर्ता आधारित पार्टी है। कार्यकर्ता पूरे पांच बरस काम भी करते हैं। वे विचार आधारित कार्यकर्ता प्रत्याशी चाहते हैं। पं. दीनदयाल उपाध्याय ने उपयुक्त प्रत्याशी की परिभाषा की थी-'जो सदन में दल के दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करे और जो निर्वाचन क्षेत्र के लोगों की भावनाओं को प्रकट करे।' उन्होंने धन प्रभाव पर भी लिखा था, 'अनेक को किसी अन्य योग्यता पर नहीं, बल्कि धन क्षमता के कारण टिकट दिए जाते हैं। वे जनता के पास मत याचना नहीं वोट खरीदने जाते हैं।' उन्होंने गलत प्रत्याशी को वोट न देने की अपील भी की थी। डॉ. संपूर्णानंद ने उनके इस विचार की प्रशंसा की थी। आज विचारनिष्ठ नहीं 'जिताऊ उम्मीदवार' की प्रतिष्ठा है। राहुल गांधी ने खुली बैठकों में प्रत्याशी चयन की कसरत की। निष्ठावान कांग्रेसजनों की हसरत तो भी पूरी नहीं हुई। प्रत्याशी चयन को लेकर समूचे दलतंत्र में बवाल हैं। जनतंत्र का आधार दलतंत्र है। मूलभूत प्रश्न यह है कि जिस दलतंत्र में आंतरिक जनतंत्री बहसें नहीं हैं, जिसके पास प्रत्याशी चयन की कोई नियमावली नहीं है उससे जनतंत्र को पालने पोसने की उम्मीद कैसे की जा सकती है?

भारत को स्वाधीन हुए 67 बरस हो गए। कोई भी दल टिकट वितरण की सुसंगत प्रणाली नहीं बना पाया। भाजपा कार्यकर्ता आधारित पार्टी है। कार्यकर्ता पूरे पांच बरस काम भी करते हैं। वे विचार आधारित कार्यकर्ता प्रत्याशी चाहते हैं। पं. दीनदयाल उपाध्याय ने उपयुक्त प्रत्याशी की परिभाषा की थी-'जो सदन में दल के दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करे और जो निर्वाचन क्षेत्र के लोगों की भावनाओं को प्रकट करे।' उन्होंने धन प्रभाव पर भी लिखा था, 'अनेक को किसी अन्य योग्यता पर नहीं, बल्कि धन क्षमता के कारण टिकट दिए जाते हैं। वे जनता के पास मत याचना नहीं वोट खरीदने जाते हैं।' उन्होंने गलत प्रत्याशी को वोट न देने की अपील भी की थी। डॉ. संपूर्णानंद ने उनके इस विचार की प्रशंसा की थी।

भारतीय राजनीति ने अपना वैचारिक आधार नष्ट कर दिया है। मोटे तौर पर यहां दो विचार थे। वामपंथ एक मजबूत विदेशी विचार था और राष्ट्रवाद भारतीय अनुभूति। राष्ट्रवाद का प्रतिनिधित्व जनसंघ करता था। यही बाद में भाजपा हुई। लोहिया, नरेंद्र देव, मधु लिमये, किशन पटनायक आदि ने दोनों को मिलाकर भारतीय समाजवादी विचार का तानाबाना बुना था। कांग्रेस का कोई विचार नहीं था। कम्युनिस्ट छोड़ सभी विचारधाराओं ने स्वाधीनता संग्राम लड़ा था। स्वाधीनता के बाद कांग्रेस सत्तावादी हो गई। उदारीकरण ने कांग्रेसीकरण को आधुनिक बनाया। पार्टियां कंपनियां बन गईं। औद्योगिक कंपनियां पार्टियों के कामकाज में हस्तक्षेप करने लगीं। हाईकमानों ने इसका स्वागत किया। कंपनी का मुख्य लक्ष्य मुनाफा होता

है-विचार नहीं। राजनीति का मुख्य लक्ष्य राज हो गया। नीति आधारित राज समाज के परिवर्तनकामी स्वप्न भहरा गए। अब सब कुछ गड्डमगड्ड हैं। जैसे वे, वैसे ये। मतदाता असमंजस में हैं। विचार भिन्नता ही दल पहचान का प्रतीक थी। अब विचार की जगह चेहरे हैं। चेहरों पर दांव हैं।

चुनाव सरकार या जनप्रतिनिधि चुनने का ही मौका नहीं होते। वे विचार आधारित जनशिक्षण का महत्वपूर्ण अवसर होते हैं। डॉ. लोहिया नीतियों पर राष्ट्रीय बहस के लिए ही पं. नेहरू के सामने चुनाव लड़े थे। कम्युनिस्ट, जनसंघ और सोशलिस्ट विचार प्रचार के लिए ही कमजोर सीटों पर भी प्रभावी जनअभियान चलाते थे। समाज का राजनीतिकरण जरूरी है। वैचारिक राजनीतिकरण, जाति, पंथ, मजहब और क्षेत्र की सीमाएं नहीं मानता। विचारों की टक्कर मूल्यवान है। यही लोकतंत्र की शान है। उम्मीदवारों की टक्कर बेमतलब है। चुनाव में मतदाता ही सम्राट है। प्रत्याशी चयन में मतदाता की सामान्य इच्छा की भी झलक नहीं है। वे अपने बीच काम करने वाला स्वच्छ छवि का प्रत्याशी चाहते हैं, लेकिन दल मतदाताओं के विवेक पर भरोसा नहीं करते। वे दागी, बाहुबली, धनबली प्रत्याशियों को जिताऊ मानते हैं। धन साधन और प्रचार से मतदाता को प्रभावित करने का प्रयास करते हैं।

प्रत्याशी दलीय विचार के प्रतिनिधि होने चाहिए, लेकिन चुनावी महाभारत में दलीय प्रतिबद्धता की पहचान बहुत मुश्किल है। राजनीति दल निरपेक्ष हो रही है। पाला बदल थोक के भाव हुआ है। झंडा, टोपी और चुनाव निशान बदल गए हैं। मतदाता कैसे पहचाने? भ्रष्टाचार का खात्मा भाजपा का मुद्दा है, कांग्रेस का भी है। निजी क्षेत्र की अर्थव्यवस्था सबका एजेंडा है। अर्थनीति पर कोई असहमति नहीं। पंथनिरपेक्षता पर आम सहमति है ही। दागी और भ्रष्ट छवि वाले उम्मीदवारों से कोई परहेज नहीं। जातीय अंकगणित सबकी चिंता है। विचारधारा के लिए विपक्ष में बैठने की घोषणा कम्युनिस्ट भी नहीं कर रहे हैं। तीन चार जिलों में ही प्रभाव रखने वाले छोटे-छोटे दल भी सरकार में जाने के लिए ही चुनाव लड़ रहे हैं। केजरीवाल की पार्टी की कोई संभावना नहीं, बावजूद इसके वे सत्ता में आकर मीडिया को ठीक करने की धौंस दे चुके हैं। दिल्ली के चुनावों ने भी उन्हें बहुमत कहां दिया था? उनकी सरकार नीतिविहीन राजनीति का ही सड़ा फल थी। इसलिए अल्पमृत्यु का शिकार हुई। प्रत्याशिता पर सभी दलों में बवाल हैं। चुनाव जनतंत्री उत्सव नहीं निर्मम युद्ध हो गए हैं और युद्ध की कोई आचार संहिता नहीं होती।

भारत अपनी सर्वोच्च प्रतिनिधि सभा चुन रहा है। 15वीं लोकसभा ने निराश किया। हुल्लड़ ज्यादा रहा, कामकाज कम। कामकाजी लोकसभा और कर्मठ सदस्य सबकी अभिलाषा हैं। शिक्षित और जागरूक मतदाता तत्पर भी हैं, लेकिन प्रत्याशी देने वाले दलतंत्र ने निराश किया है। जनअभियानों में भी सारी बहसें चेहरों तक ही सीमित हैं। विदेश नीति, अर्थनीति, राष्ट्रीय सुरक्षा और गरीबी, बेरोजगारी जैसे बुनियादी प्रश्नों पर नीतिगत बहसें नहीं। गोमांस निर्यात रोकने या पशुधन संवर्धन जैसे राज्य के नीति निदेशक तत्वों पर भी नहीं। खेती किसानी भी बहस में नहीं है। चेहरे ब्रांड हैं। ब्रांड का प्रचार है। ब्रांड को लेकर ही तू-तू मैं-मैं है। तुम्हारा ब्रांड बकवास। घिसा पिटा बेकार और जनविरोधी, लेकिन हमारा ब्रांड अच्छा, टिकाऊ और मजबूत है। पहले इस्तेमाल करें, तब विश्वास करें। सभी ब्रांड क्षणभंगुर हैं। नया मॉडल आया, पुराना गया। दिक्कत है कि ब्रांड और मॉडल पांच साल तक चलते ही नहीं। नीति और विचार की सत्ता अमर है। चेहरे और ब्रांड विचार का विकल्प नहीं हो सकते। नीतिविहीन राजनीति ने मतदाता के विकल्प सीमित किए हैं। विकल्प कम हैं। विवेकपूर्ण मतदान ही एकमेव रास्ता है। ■

(लेखक उप्र विधान परिषद के सदस्य हैं)

(साभार- दैनिक जागरण)

जनअभियानों में भी सारी बहसें चेहरों तक ही सीमित हैं। विदेश नीति, अर्थनीति, राष्ट्रीय सुरक्षा और गरीबी, बेरोजगारी जैसे बुनियादी प्रश्नों पर नीतिगत बहसें नहीं। गोमांस निर्यात रोकने या पशुधन संवर्धन जैसे राज्य के नीति निदेशक तत्वों पर भी नहीं। खेती किसानी भी बहस में नहीं है। चेहरे ब्रांड हैं। ब्रांड का प्रचार है। ब्रांड को लेकर ही तू-तू मैं-मैं है। तुम्हारा ब्रांड बकवास। घिसा पिटा बेकार और जनविरोधी, लेकिन हमारा ब्रांड अच्छा, टिकाऊ और मजबूत है। पहले इस्तेमाल करें, तब विश्वास करें। सभी ब्रांड क्षणभंगुर हैं। नया मॉडल आया, पुराना गया। दिक्कत है कि ब्रांड और मॉडल पांच साल तक चलते ही नहीं। नीति और विचार की सत्ता अमर है। चेहरे और ब्रांड विचार का विकल्प नहीं हो सकते। नीतिविहीन राजनीति ने मतदाता के विकल्प सीमित किए हैं। विकल्प कम हैं। विवेकपूर्ण मतदान ही एकमेव रास्ता है।

कांग्रेस का आत्मघाती गोल

✍ राजनाथ सिंह सूर्य

कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी ने महात्मा गांधी की हत्या में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का हाथ होने की बात कहकर एक बड़े विवाद को जन्म दे दिया है। यह संघ के खिलाफ दुष्प्रचार की ताजा कड़ी है। एक अर्से तक साम्यवादियों तथा छद्म सेक्युलरवादियों द्वारा संघ के खिलाफ इस कुप्रचार की धार जब पूरी तरह कुंद हो गई है तब उसे धार देने की राहुल गांधी ने कोशिश की, यह तो वही जानें, लेकिन यह उल्लेखनीय है कि संघ ने संभवत: पहली बार इस कुप्रचार का गंभीरतापूर्वक संज्ञान लिया है। चुनावी माहौल में राहुल गांधी की इस निराधार अभिव्यक्ति के लिए जहां उसने निर्वाचन आयोग में शिकायत की है वहीं उन्हें अदालत में भी ले जाने का निर्णय लिया है।

अर्जुन सिंह सहित कई लोग इसी तरह की अभिव्यक्तियों के लिए अदालत में माफी मांग चुके हैं, फिर भी कांग्रेस के नायक ने नाहक ही उसे अपना हथियार बनाया है। उन्होंने यह अभिव्यक्ति महाराष्ट्र के भिवंडी में की जो मुस्लिम बहुल इलाका है। क्या इससे उन्हें मुस्लिम मतों को कांग्रेस के पक्ष में लाने में सफलता मिलेगी? कांग्रेस में सोनिया गांधी और राहुल गांधी की चुनावी सफलता के लिए न केवल संजय सिंह को असम से राज्यसभा भेजा गया, बल्कि उनकी पत्नी को सुल्तानपुर से उम्मीदवार भी बना दिया गया। इतना ही नहीं, यह भी माना जा रहा है कि कांग्रेस मुलायम सिंह और उनकी बहू डिंपल के खिलाफ उम्मीदवार नहीं खड़ा करेगी ताकि अमेठी और रायबरेली में सपा का समर्थन मिल सके। यह समझौता ही कांग्रेस के गिरते आत्मविश्वास का द्योतक है।

महात्मा गांधी की हत्या नाथूराम गोडसे ने 1948 में की थी। गोडसे संघ से घृणा करता था, फिर भी संघ पर प्रतिबंध लगा दिया गया। संघ के हजारों स्वयंसेवकों ने प्रतिबंध उठवाने के लिए सत्याग्रह कर देश भर की जेलें भर दी थीं। आखिरकार संघ पर प्रतिबंध हटा। 1949 में गृह मंत्रालय द्वारा एक प्रश्न के उत्तार में दी गई सूचना के अनुसार प्रतिबंध 'बिना शर्त' हटाया गया। गांधी हत्याकांड का जो मुकदमा चला जिसमें स्वतंत्रता सेनानी सावरकर को भी अभियुक्त बनाया गया था उसमें संघ के किसी स्वयंसेवक को न तो अभियुक्त बनाया गया था और न मुकदमे के दौरान प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से संघ की संलिप्तता का उल्लेख किया गया। फिर भी यह दुष्प्रचार चलता रहा कि संघ का हाथ गांधी की हत्या में था। संघ ने इस दुष्प्रचार को निर्मूल बताने में अनावश्यक प्रयास करने के बजाय अपने कार्य का जीवन के सभी क्षेत्रों में जिस प्रकार फैलाव किया उससे समाज में स्वत: कुप्रचार का पर्दाफाश होता गया। पिछले कुछ वर्षों में एकाकी दिग्विजय सिंह के अलावा किसी ने भी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में इस आरोप की चर्चा नहीं की। न कभी जवाहरलाल नेहरू ने कहा, न इंदिरा गांधी ने और न राजीव गांधी ने। यहां तक कि सोनिया गांधी ने कभी इस आरोप को हथियार नहीं बनाया, लेकिन आश्चर्यजनक रूप से कांग्रेस के नए नायक ने इस हथियार का सहारा लेना उचित समझा है। उनका यह प्रयास गड़े मुर्दे उखाड़ने वाली कहावत को भी मात कर देता है। ऐसा लगता है कि कांग्रेस के पास इस प्रकार की अभिव्यक्तियों के अलावा और कुछ नहीं है, क्योंकि उसके पास अपने दस वर्ष के शासनकाल की उपलब्धियों के नाम कुछ भी नहीं है।

कांग्रेस ने सदैव अपने को सेक्युलर और प्रगतिशील विकासोन्मुख संगठन के रूप में पेश किया है, लेकिन पिछले दस वर्ष के शासन के बाद आम जनता के

...शेष पृष्ठ 28 पर

महात्मा गांधी की हत्या नाथूराम गोडसे ने 1948 में की थी। गोडसे संघ से घृणा करता था, फिर भी संघ पर प्रतिबंध लगा दिया गया। संघ के हजारों स्वयंसेवकों ने प्रतिबंध उठवाने के लिए सत्याग्रह कर देश भर की जेलें भर दी थीं। आखिरकार संघ पर प्रतिबंध हटा। 1949 में गृह मंत्रालय द्वारा एक प्रश्न के उत्तार में दी गई सूचना के अनुसार प्रतिबंध 'बिना शर्त' हटाया गया। गांधी हत्याकांड का जो मुकदमा चला जिसमें स्वतंत्रता सेनानी सावरकर को भी अभियुक्त बनाया गया था उसमें संघ के किसी स्वयंसेवक को न तो अभियुक्त बनाया गया था और न मुकदमे के दौरान प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से संघ की संलिप्तता का उल्लेख किया गया। फिर भी यह दुष्प्रचार चलता रहा कि संघ का हाथ गांधी की हत्या में था।

भरोसा गंवाते केजरीवाल

✍ टीआर रामचंद्रन

आम आदमी पार्टी के नेता अरविंद केजरीवाल हिंदू धर्म के सात पवित्र शहरों में से एक वाराणसी से चुनाव लड़ रहे भाजपा के प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार नरेंद्र मोदी के खिलाफ अब ज्यादा बोलने से बच रहे हैं। मोदी के खिलाफ दांव के तौर पर भ्रष्टाचार को लक्ष्य करते हुए केजरीवाल ने चेताया है कि यदि आप सत्ता में आती है तो तमाम लोग जेल की सलाखों के पीछे होंगे। केजरीवाल को यह याद दिलाने की जरूरत है कि दूसरों की तरह वह भी एक लोकतांत्रिक व्यवस्था में रह रहे हैं, जहां कानून का शासन चलता है, न कि जंगल राज। दिल्ली में अपने संक्षिप्त 49 दिन के अराजक मुख्यमंत्रित्व काल के अनुभव से भी उन्हें यह बात समझ में आ गई होगी।

अरविंद केजरीवाल और आम आदमी पार्टी ने जनता से जो बड़े-बड़े वादे किए थे उन्हें पूरा करने में वह विफल रहे। महिलाओं की सहायता के लिए शुरू की गई हेल्पलाइन सेवा भी निर्थक साबित हुई। बहुप्रचारित जनलोकपाल बिल भी मूर्त रूप नहीं ले सका, क्योंकि आप ने अप्रत्याशित रूप से इसके लिए रामलीला मैदान में बहस कराने की मांग की। कम से कम पिछले चार दशकों में किसी भी अन्य नेता ने पत्रकारों को इस तरह शायद ही कभी धमकाया हो, जैसा केजरीवाल ने किया। केजरीवाल खुद को चर्चा में बनाए रखने के लिए विवादास्पद मुद्दों को गाहे-बगाहे उठाते रहते हैं, फिर चाहे वह गलत कारणों से ही क्यों न हो? संभवत: यह उनकी सोची समझी चाल है जिसके तहत वह मीडिया वालों के खिलाफ आक्रामक बयान देते हैं।

पूर्व के अनुभव यही दर्शाते हैं कि राजनेताओं के साथ चौथे खंभे का हनीमून समय शुरू होने से पहले ही समाप्त हो जाता है। ऐसा नेताओं की अस्थिरता और अधीरता के चलते होता है। प्रथम चरण में केजरीवाल और उनके साथियों की तरफ जनता आकर्षित हुई, क्योंकि भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई लड़ने के लिए वह बिल्कुल अलग नजरिया लेकर राजनीति में आए थे। यह भी रोचक है कि तमाम पत्रकार अब आप का हिस्सा हैं और उनमें से कई को अप्रैल-मई में होने वाले 16वीं लोकसभा चुनाव के लिए टिकट भी दिया गया है। हालांकि अब वह खुद को बेचैन पा रहे हैं, क्योंकि केजरीवाल ने उनके पेशे की आलोचना शुरू कर दी है। आप के एक उम्मीदवार ने इस बारे में खुलासा किया है कि पार्टी के कार्यकर्ता अब चौथे खंभे के सदस्यों से घृणा करने लगे हैं और प्रचार के दौरान वह उनके साथ घूमना पसंद नहीं कर रहे। मीडिया के लोग अब दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की ईमानदारी और दूसरों से अलग होने के उनके दावे पर सवाल उठा रहे हैं। जो भी हो, जब मीडिया ने उनकी आलोचना शुरू की तो अरविंद केजरीवाल रातोंरात मीडिया से नाराज हो गए और आरोप लगाया कि चौथा खंभा भी राजनेताओं और बड़े बिजनेसमैन के हाथों खेल रहा है।

क्या अरविंद केजरीवाल प्रिंट और चौबीसों घंटों चलने वाले चैनलों में अपनी प्रचार की उत्कंठा को दबाने के लिए खुद तैयार होंगे। अनिवार्य रूप से यहीं से वह अपने लिए ऊर्जा हासिल करते हैं। आम आदमी और बुद्धिजीवी वर्ग अब उनके दोहरे चरित्र को समझने लगा है कि क्यों वह लगातार मीडिया चर्चा में बने रहना चाहते हैं। चुनाव से

लोकसभा के माध्यम से संसद में प्रवेश करने के लिए मोदी का यह पहला प्रयास है। वर्ष 2009 में जिस राज्य से भाजपा के मात्र 10 लोकसभा सांसद थे वहां की कुल 80 सीटों में अब 40 से अधिक सीटें मिलने की उम्मीद है। मोदी के विश्वस्त सहयोगी अमित शाह को उत्तर प्रदेश के चुनावों के लिए विशेष तौर पर लाया गया था, जिन्हें मोदी के पक्ष में वोटों का ध्रुवीकरण होने की उम्मीद है। चुनावी युद्ध के दो मुख्य राज्यों बिहार 40 सीटें, और उत्तर प्रदेश में कुल 120 सीटों के लिए मोदी विशेष रूप से तैयारी कर रहे हैं और उम्मीद है कि तकरीबन आधी सीटें या कहें कि यहां कम से कम 70 सीटें मिलने की उम्मीद है।

पूर्व अब अरविंद केजरीवाल को घबराहट महसूस होने लगी है कि क्या वह फिर बड़ा शिकार कर पाएंगे। पहली बार उन्हें उत्तर प्रदेश के वाराणसी में स्थिति बदली हुई दिख रही है, क्योंकि उनके समक्ष एक 56 इंच का सीना रखने वाला विरोधी है, जिसकी आंखें वहां हैं जिसकी कोई अन्य उत्तर प्रदेश में भाजपा के संदर्भ में कल्पना भी नहीं कर सकता।

लोकसभा के माध्यम से संसद में प्रवेश करने के लिए मोदी का यह पहला प्रयास है। वर्ष 2009 में जिस राज्य से भाजपा के मात्र 10 लोकसभा सांसद थे वहां की कुल 80 सीटों में अब 40 से अधिक सीटें मिलने की उम्मीद है। मोदी के विश्वस्त सहयोगी अमित शाह को उत्तर प्रदेश के चुनावों के लिए विशेष तौर पर लाया गया था, जिन्हें मोदी के पक्ष में वोटों का ध्रुवीकरण होने की उम्मीद है। चुनावी युद्ध के दो मुख्य राज्यों बिहार 40 सीटें, और उत्तर प्रदेश में कुल 120 सीटों के लिए मोदी विशेष रूप से तैयारी कर रहे हैं और उम्मीद है कि तकरीबन आधी सीटें या कहें कि यहां कम से कम 70 सीटें मिलने की उम्मीद है।

इससे भगवा खेमे की उम्मीदों को बल मिला है और केंद्र में सरकार बनाने के लिए जरूरी 272 के जादुई आंकड़े तक पहुंचने की संभावना बलवती हुई है। दिल्ली विधानसभा चुनावों में

उत्तर प्रदेश में बहुत पहले चुनाव तैयारी शुरू कर चुके नरेंद्र मोदी की तुलना में अरविंद केजरीवाल की संभावनाएं बहुत कम हैं।

केजरीवाल ने तत्कालीन मुख्यमंत्री शीला दीक्षित के खिलाफ लड़ाई को अपना मिशन बना लिया था। वह पदस्थ मुख्यमंत्री को हराने में सफल हुए, जो राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में लगातार तीन चुनाव जीतने के साथ 15 वर्षों तक सत्ता में रहीं। यह कोई सामान्य उपलब्धि नहीं थी। कांग्रेस और कुछ अन्य राजनीतिक पार्टियों की तरह आप भी भाजपा को सांप्रदायिक कहते हुए उसका विरोध करती है और मोदी को प्रधानमंत्री बनने से रोकना चाहती है। कोई आश्चर्य नहीं कि आप और कांग्रेस एक ही उद्देश्य पर काम कर रही हैं। अभी तक के चुनाव सर्वेक्षण यही बता रहे हैं कि आम आदमी पार्टी का प्रदर्शन नगण्य रहेगा और उसे कुल 543 लोकसभा सीटों में महज दर्जन भर सीटों पर ही जीत मिलेगी।

दिल्ली इस बात का प्रमाण है कि यह चुनाव अनुमान पूर्णत: गलत भी हो सकते हैं। हालांकि नरेंद्र मोदी के खिलाफ कई मोर्चों पर अरविंद केजरीवाल की लड़ाई निर्थक साबित हो सकती है। यही कारण है कि उन्होंने अपना रुख बदल लिया है और नरेंद्र मोदी के खिलाफ चुनाव लड़ने से पूर्व वाराणसी की जनता की राय लेने की बात कह रहे हैं। उत्तर प्रदेश में बहुत पहले चुनाव तैयारी शुरू कर चुके नरेंद्र मोदी की तुलना में अरविंद केजरीवाल की संभावनाएं बहुत कम हैं।

अपेक्षा के अनुरूप नरेंद्र मोदी गुजरात के वड़ोदरा सीट से भी चुनाव लड़ेंगे। वाराणसी की जनता का दुख यही है कि बाहरी लोग यहां आकर चुनाव लड़ते हैं और जीत दर्ज करते हैं, लेकिन बाद में घोसला खाली कर देते हैं। इस स्थिति में यदि एक और परदेशी या बाहरी व्यक्ति अरविंद केजरीवाल के रूप में

वाराणसी की जनता इससे खुश है कि प्रधानमंत्री पद का दावेदार एक व्यक्ति गुजरात से आकर हिंदुओं के इस पवित्र शहर से चुनाव लड़ रहा है। मोदी की लोकप्रियता 18 से 30 आयुवर्ग के युवाओं में बहुत अधिक है, जो सोशल मीडिया पर उनके प्रशंसक भी हैं। उन्हें विश्वास है कि मोदी गुजरात के विकास मॉडल को पूरे देश में भी दोहराएंगे, जबकि अरविंद केजरीवाल के पास देश को देने के लिए कोई विजन नहीं है।

यहां से चुनाव लड़ता है तो उन्हें कोई बहुत अंतर नहीं पड़ता। कटु सत्य यही है कि लंबे समय से वाराणसी में रहने वाला कोई व्यक्ति इसका प्रतिनिधित्व नहीं कर रहा है। वाराणसी की जनता इससे खुश है कि प्रधानमंत्री पद का दावेदार एक व्यक्ति गुजरात से आकर हिंदुओं के इस पवित्र शहर से चुनाव लड़ रहा है। मोदी की लोकप्रियता 18 से 30 आयुवर्ग के युवाओं में बहुत अधिक है, जो सोशल मीडिया पर उनके प्रशंसक भी हैं। उन्हें विश्वास है कि मोदी गुजरात के विकास मॉडल को पूरे देश में भी दोहराएंगे, जबकि अरविंद केजरीवाल के पास देश को देने के लिए कोई विजन नहीं है। ■

(लेखक जाने-माने राजनीतिक विश्लेषक हैं।)

(दैनिक जागरण से साभार)

दक्षिण में डूब रहा कांग्रेस का सूरज

✍ अरुण कुमार त्रिपाठी

कांग्रेस ने आंध्र प्रदेश का विभाजन क्या किया कि उसके अपने दल (दिल) के इतने टुकड़े हो गए हैं कि कौन कहां गिरेगा, कुछ कहा नहीं जा सकता।

'जय समैक्यांध्र' (जेएसपी) नाम से नई पार्टी बनाने वाले पूर्व कांग्रेस मुख्यमंत्री किरण कुमार रेड्डी और वाईएसआर कांग्रेस के मुखिया जगनमोहन को अभी तो अपनी मंजिल पानी है और वह आसान नहीं है। इसलिए वे उसी आधार पर राजनीति करेंगे और सीमांध्र के लिए बेहतर से बेहतर पैकेज हासिल करने की कोशिश करेंगे। वजह साफ है कि जिस तरह संसद में भाजपा ने भी विभाजन का समर्थन किया, लगता नहीं कि अब वह फैसला पलटा जाएगा।

लेकिन कांग्रेस के लिए सबसे बड़ी विडंबना यह बनी है कि उससे विलय का वादा करके तेलंगाना राष्ट्र समिति के नेता के चंद्रशेखर राव मुकर गए। हालांकि जिस अंदाज में वे सोनिया गांधी के आवास पर अपने परिवार के साथ तेलंगाना गठन का आभार जताने गए। थे उससे लग रहा कि वे तो अब घरेलू हो गए हैं। लेकिन घरेलू होने को कौन कहे, वे तो अब कांग्रेस के साथ गठबंधन करने को भी तैयार नहीं दिखते। यही कारण है कि एक तरफ कांग्रेस के हनुमंत राव और जयराम रमेश जैसे नेता जहां जगनमोहन को उनके पिता राजशेखर रेड्डी (वाईएसआर) की तरफ से विधानसभा में 2009 में तेलंगाना के पक्ष में दिए गए वचन की याद दिला रहे हैं, तो दूसरी तरफ कांग्रेस में यह राय भी बन रही है कि यदि तेलंगाना में सोनिया गांधी स्वयं टीआरएस नेता चंद्रशेखर राव के खिलाफ मोर्चा संभालें तभी कोई बात बन सकती है। तेलंगाना में कांग्रेस 12 लोकसभा सीटों और 75 विधानसभा सीटों की उम्मीद लगाकर चल रही है, लेकिन चारों तरफ से उसे झटका देने वाली ताकतों के होते हुए यह उम्मीद दिवास्वप्न ही दिखती है।

आंध्र प्रदेश कांग्रेस का वह गढ़ रहा है जिसके बूते पर वह 2004 और 2009 में सत्ता में आई। 30 से 33 सीटें हासिल करके कांग्रेस ने लोकसभा में वह हैसियत बनाई जिसके चलते उसके प्रति क्षेत्रीय दल आकर्षित हुए और उसने यूपीए को एनडीए जैसा ही टिकाऊ और भरोसेमंद गठबंधन का रूप दिया। लेकिन जहां वाईएसआर के निधन और आंध्र प्रदेश के विभाजन के बाद यहां कांग्रेस का बिखराव हो गया, वहीं तमिलनाडु जैसे महत्त्वपूर्ण राज्य में भी कोई साथी न मिल पाने के कारण कांग्रेस का दक्षिण से दाना पानी उठता लग रहा है। यहां यह बात याद रखनी होगी कि उत्तर भारत में कांग्रेस को 1967 से ही झटका लगना शुरू हो गया था और 1977 में जब उत्तर भारत में उसका सूपड़ा साफ हो गया था तो उसकी हैसियत दक्षिण ने बनाए रखी। कांग्रेस को आपातकाल के दंड के तौर पर सत्ता से बाहर किए जाने के बावजूद दक्षिण ने न सिर्फ उसे जिंदा रखा, बल्कि इंदिरा गांधी भी कर्नाटक के चिकमंगलूर से चुनाव जीत कर लोकसभा में वापस लौटीं।

पिछले दो कार्यकाल में यूपीए के सत्तासीन होने के पीछे तमिलनाडु में द्रमुक से कांग्रेस का गठबंधन ठोस वजह रहा है। 2004 में द्रमुक, कांग्रेस, वामपंथी, पीएमके, एमडीएमके के गठबंधन ने चुनाव में मैदान मार लिया था। तब इस गठबंधन को 36 सीटों पर एक लाख से ज्यादा मतों से जीत हासिल हुई थी। 2009 में इस गठबंधन को जीत मिली लेकिन गठबंधन कमजोर पड़ने से जीत का अंतर घटा। द्रमुक को ज्यादातर सीटों पर जो जीत मिली उसका अंतर पचास हजार से भी कम था। फिर भी द्रमुक को 18और कांग्रेस को 8 सीटों पर जीत हासिल हुई।

लेकिन इस बार कांग्रेस के साथ न तो द्रमुक है, न ही अन्नाद्रमुक। बल्कि उसके साथ अन्य छोटे दल भी गठबंधन करने को उत्सुक नहीं दिखते। यह सही है कि दोनों प्रमुख द्रविड़ दलों में से किसी ने भी न तो कांग्रेस से गठबंधन किया है, न ही भाजपा से। लेकिन भाजपा ने न अभी गठबंधन की आस छोड़ी है, न ही प्रयास बंद किया है। भाजपा ने कम से कम रामदास की पीएमके, वाइको की एमडीएमके और विजयकांत की डीएमडीके के साथ एक तीसरा फ्रंट बनाया है और साथ ही द्रमुक से निष्कासित करुणानिधि के बेटे अलागिरी से भी तालमेल करने के प्रयास में लगी है।

स्पष्ट तौर पर अस्सी से ज्यादा सीटों वाले तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश जैसे दक्षिण के दो प्रमुख राज्यों में कहीं बिखर कर, तो कहीं अकेले चलकर

कांग्रेस वह हैसियत नहीं पा सकती जिसके बूते वह दिल्ली में शासन कर सके। आंध्र प्रदेश में तो कांग्रेस को एनटीआर ने कमजोर किया था और अब वह खुद ही बिखर गई है। रही तमिलनाडु की बात तो वहां सत्तर के दशक से ही कांग्रेस द्रमुक या अन्नाद्रमुक में से किसी से गठबंधन करके सत्ता में आती रही है। बिना किसी तमिल क्षेत्रीय दल के सहयोग के पिछले 20-25 सालों में दिल्ली में कोई सरकार नहीं बनी है। चाहे नरसिंह राव की सरकार रही हो या वाजपेयी या फिर मनमोहन की। किसी न किसी रूप में उन दोनों क्षेत्रीय दलों का साथ रहा है।

कांग्रेस इस गलतफहमी में रही कि वह स्वाभाविक तौर पर राष्ट्रीय धर्मनिरपेक्ष पार्टी है और उसे क्षेत्रीय दल लपककर समर्थन देंगे। इसी चक्कर में उसे चुनाव पूर्व सहयोगी नहीं मिल रहे हैं और बाद में तभी मिलेंगे जब उसकी अपनी हैसियत बेहतर होगी। इस दौरान कांग्रेस यह भी सोचती रही कि भाजपा मोदी को नेता बनाकर स्वीकार्य हो ही नहीं सकती, लेकिन भाजपा मोदी को आगे करके भी लगातार गठबंधन के नए दौर में प्रवेश कर रही है। कहीं चंद्रबाबू नायडू उसका साथ दे रहे हैं, तो कहीं टीआरएस उससे बात चला रही है। ऐसे में जगनमोहन या किरण रेड्डी का भी भाजपा परहेज खत्म हो जाए तो आश्चर्य नहीं होगा। अन्नाद्रमुक और द्रमुक तो पहले भी एनडीए का हिस्सा रह चुके हैं।

कांग्रेस प्रणाली का उत्तर की तरह दक्षिण में तीव्र विखंडन हो रहा है यह तो स्पष्ट है। लेकिन उसकी जगह पर भाजपा काबिज हो रही है यह अभी स्पष्ट नहीं है। वह जगह क्षेत्रीय दल ले रहे हैं और एक हद तक उनके माध्यम से भाजपा भी लेने की फिराक में है। 1991 के बाद की यह परिघटना भारतीय राजनीति को नई शक्ल देने जा रही है। कांग्रेस प्रणाली में क्षेत्रीयता और असहमति को आत्मसात करने की गुंजाइश नहीं बची है। उसकी साफ वजह है कि उसने अपने को सामाजिक-राजनीतिक आधारों वाली पार्टी बनाने की बजाय उदारीकरण की नीतियों वाली पार्टी बनाकर छोड़ दिया। आजकल धर्मनिरपेक्षता का प्रमाणपत्र दिल्ली में बैठे बुद्धिजीवी नहीं, राज्यों में जड़ें जमाए क्षेत्रीय दल देते हैं और क्षेत्रीयता की जड़ें स्थानीय नेताओं से जमती हैं। कांग्रेस की सत्ता का सूर्य अगर दक्षिणायन नहीं रहा तो वह उत्तरायण भी नहीं हो पाएगा। यह हमारे राजनीतिक इतिहास की महत्वपूर्ण घटना है। ■ *(साभार- राष्ट्रीय सहारा)*

पृष्ठ 24 का शेष...

बीच उसकी छवि विघटनकारी, तुष्टीकरण प्रेमी और भ्रष्टाचार में लिप्त दल की बनी है। इसी के चलते वह एक डूब रहे व्यक्ति की तरह हताशा में इधर-उधर हाथ-पैर मारती नजर आ रही है। राहुल गांधी जिस प्रकार से जनभावना को समझने के लिए चौपाल लगा रहे हैं उससे यह आकलन कि वे 2014 नहीं 2019 के लिए तैयारी कर रहे हैं, असंगत नहीं लगता। इसलिए यह माना जा रहा है कि उन्होंने नरेंद्र मोदी के खिलाफ मोर्चा संभालने का दायित्व आम आदमी पार्टी, समाजवादी पार्टी और जनता दल को सौंप दिया है। तीनों ही देशव्यापी केंद्रीय कुशासन से अधिक मोदी के गुजरात मॉडल की बखिया उधेड़ने में लगे हुए हैं। मोर्चे से पीठ दिखाकर भागने और अपनी पीठ स्वयं थपथपाने वाले एक नवोदित- भ्रमित समूह के नेता भले ही यह दावा करें कि भ्रष्टाचार से अधिक सांप्रदायिकता खतरनाक है, लेकिन तथ्य तो यही है कि सांप्रदायिकता को वर्तमान चुनाव में मुद्दा बनाने का प्रयास करने वालों को विकास को मुद्दा बनाने वालों के सामने मुंह की खानी पड़ रही है। यह चुनाव विकास के मुद्दे की ओर ही मुड़ता जा रहा है। इसी के साथ कथित सेक्युलरिस्टों की असलियत भी एक-एक कर सामने आ रही है। शायद पहली बार एक ऐसा समुदाय भी वोट बैंक की राजनीति के दुष्परिणामों के प्रति सचेत होता नजर आ रहा है जिसे दशकों से सिर्फ और सिर्फ वोट बैंक के रूप में ही देखा जाता रहा है।

यदि चुनाव विश्लेषक यह आकलन प्रस्तुत कर रहे हैं कि इस बार कांग्रेस की लोकसभा सीटों की संख्या दो अंकों तक ही सिमटी रहेगी तो इस पर आश्चर्य नहीं। कांग्रेस इस समय अपरिपक्व नेतृत्व और कुत्सित मानसिकता वाले चापलूसों से घिरी पार्टी बनकर रह गई है। यही कारण है कि राहुल गांधी अपनी ही अभिव्यक्तियों से कांग्रेस की साख को गिराने का काम कर रहे हैं। अंग्रेजी की एक कहावत है जिसका अर्थ है कि जब भी वे बोलने के लिए मुंह खोलते हैं तो उसमें अपना पैर डाल लेते हैं। कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी की भी यही स्थिति हो गई है। वे जब भी जहां भी कुछ बोलते हैं तो कांग्रेस की ताकत को और अधिक घटा देते हैं। अब तो अपनी अभिव्यक्ति के लिए वह न्यायालय में भी तलब किए जाने वाले हैं। पिछले दो वर्ष में हुए विधानसभा चुनाव में राहुल गांधी के

नेतृत्व का ही परिणाम है कि शायद ही कोई ऐसा राज्य हो जहां कांग्रेस बिखराव से अछूती रह गई हो। कहीं यह बिखराव चुनाव के बाद विघटन की ओर तो नहीं बढ़ रहा है। ■

(लेखक राज्यसभा के पूर्व सदस्य हैं)

(साभार- दैनिक जागरण)

वकीलों की सभा, नई दिल्ली

गरीब से भी गरीब व्यक्ति को न्याय मिलना चाहिए : नरेंद्र मोदी

भाजपा के प्रधानमंत्री पद के प्रत्याशी श्री नरेंद्र मोदी ने 14 मार्च 2014 की शाम को दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में वकीलों की एक बड़ी सभा को संबोधित किया। इस सभा का आयोजन प्रसिद्ध कानूनविद और राज्य सभा के सदस्य श्री राम जेठमलानी ने किया। इस मौके पर श्री मोदी ने विधि जगत से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर विचार व्यक्त किए। श्री मोदी ने हमारी न्यायपालिका की अहमियत खासकर गरीब से भी गरीब व्यक्ति को न्याय कराने की जरूरत पर बल दिया। श्री मोदी ने कहा, ''हम एक लोकतंत्र में रहते हैं और हमारी न्यायिक प्रणाली में अटूट विश्वास है। हां, विलंब का मुद्दा है लेकिन पूरी दुनिया हमारी न्यायिक प्रणाली का सम्मान और सराहना करती है।'' न्यायपालिका की अहमियत को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि भगवान के बाद अगर कोई दूसरी जगह है जहां से न्याय पाने की उम्मीद लोग करते हैं तो वह न्यायपालिका है।

अपने संबोधन में श्री मोदी ने विधि के क्षेत्र में मानव संसाधन विकास को अहमियत देने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि सिर्फ कानून में स्नातक होना ही पर्याप्त नहीं है। उन्होंने अपराध और कानून की बदलती प्रकृति के मद्देनजर विधि विभागों में ही फोरेंसिक साइंस की पढ़ाई को प्रोत्साहित करने का आह्वान भी किया। उन्होंने कहा, ''हम सब बीपीओ को जानते हैं। लेकिन हमें अब एलपीओ यानी लीगल प्रोसेस आउटसोर्सिंग के बारे में सोचने की जरूरत है। भारत इसके लिए सर्वोत्तम स्थान है और हमारे युवा बहुत ही कुशल हैं।'' श्री मोदी ने कानून सरल बनाने की बात भी कही। उन्होंने कहा कि कई बार कानून में कई विसंगतियां रह जाती हैं जो कि अच्छी बात नहीं है। श्री मोदी ने गुजरात सरकार की ओर से इस संबंध में की गयी पहल का जिक्र भी किया। मसलन गुजरात सरकार ने तालुका स्तर पर ई-लाइब्रेरी की सुविधा मुहैया करायी जा रही है।

श्री मोदी ने विदेश मंत्री श्री सलमान खुर्शीद द्वारा सुप्रीम कोर्ट और निर्वाचन आयोग पर की गयी दुर्भाग्यपूर्ण टिप्पणी का भी करारा जवाब दिया। श्री मोदी ने कहा कि भारत के विदेश मंत्री से उम्मीद की जाती है कि वह दुनियाभर में भारत की ख्याति फैलायेंगे लेकिन उन्होंने बयान देकर इसका उल्टा किया है। उन्होंने भारत के सुप्रीम कोर्ट और निर्वाचन आयोग का अपमान करने पर विदेश मंत्री की आलोचना की। श्री मोदी ने संस्थाओं के सम्मान का आह्वान करते हुए कहा कि संस्थाएं लोकतंत्र का हश्वलमार्क हैं।

श्री राम जेठमलानी ने इस अवसर पर श्री नरेंद्र मोदी की प्रशंसा करते हुए कहा कि उन्होंने अपने मस्तिष्क में श्री नरेंद्र मोदी को भारत का प्रधानमंत्री चुन लिया है। उन्होंने भारत में अपने बचपन के दिनों को याद करते हुए बताया कि किस तरह वह इस देश में एक शरणार्थी के तौर पर आये और लोगों के आशीर्वाद तथा छोटों के प्यार से किस तरह उन्होंने अपना कानूनी करियर बनाया। उन्होंने चीन के संबंध में पंडित जवाहरलाल नेहरु की विदेश नीति की आलोचना भी की। एमडीएमके के नेता श्री वाइको ने भी श्री नरेंद्र मोदी की प्रशंसा की। श्री वाइको ने कहा कि पूरे देश में श्री मोदी की लहर चल रही है और यह प्रत्येक गांव, कस्बे, शहर और महानगर में देखी जा सकती है। श्री वाइको ने कहा, ''अभूतपूर्व चुनाव परिणाम हमारा इंतजार कर रहे हैं। कांग्रेस का सफाया हो जायेगा। कांग्रेस 100 सीटों का आंकड़ा भी पार नहीं कर पायेगी। भाजपा अपने दम पर 272 सीटें जीतकर आयेगी।'' दिल्ली की विभिन्न बार काउंसिल के प्रतिनिधि और बड़ी संख्या में वकील इस मौके पर उपस्थित थे। ■

पंजाब

मोदी की सारे समाज में बढ़ रही है स्वीकार्यता : नड्डा

भारतीय जनता पार्टी के प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार श्री नरेंद्र मोदी की समाज के सभी वर्गों में स्वीकार्यता बड़ी तेजी से बढ़ी है और श्री मोदी देश में सांप्रदायिकता, जातिवाद, क्षेत्रवाद की दीवारों को तोड़ कर एक स्वस्थ लोकतंत्र के निर्माण की दिशा में बड़ी तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। यह विचार भारतीय जनता पार्टी के अखिल भारतीय महामंत्री श्री जेपी नड्डा ने पार्टी कार्यालय में आयोजित चुनाव प्रचार अभियान समिति की बैठक को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने पार्टी के पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं को जनता के बीच जाकर श्री मोदी के नेतृत्व में पूर्ण बहुमत की सरकार बनाने के लिए जनादेश मांगने की अपील की। बैठक में चुनाव प्रचार अभियान की दिशा में हुए अब तक के कार्यों की समीक्षा की गई और भाजपा के पक्ष में तेजी से बदल रहे परिवेश में नई कार्ययोजनाओं पर विचार किया गया।

अपने संबोधन में श्री नड्डा ने कहा कि अब नए-नए राजनीतिक दल राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठजोड़ में शामिल होने को बेताब हैं और यहां तक कि खुद कांग्रेस पार्टी के बहुत से सांसद व वरिष्ठ नेता श्री मोदी के पक्ष में आने लगे हैं। सजग के विरोध में तीसरे मोर्चे के रूप में गठित कुछ अवसरवादी दल अब वास्तविकता पहचानते हुए छिटकने लगे हैं, जो स्पष्ट संकेत है कि लोकसभा चुनाव के बाद देश में श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश में राजग की सरकार गठित होने जा रही है। श्री नड्डा ने उपस्थित पदाधिकारियों को चुनाव प्रचार के लिए निजी संपर्क, परंपरागत साधनों के साथ- साथ नवीनतम तकनीक, सोशल मीडिया प्रयोग करने की अपील की।

बैठक को संबोधित करते हुए भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष श्री कमल शर्मा ने कहा कि 23 फरवरी को जगराओं में संपन्न हुई श्री नरेंद्र मोदी की फतेह रैली के बाद प्रदेश में अकाली दल बादल व भारतीय जनता पार्टी गठजोड़ की आंधी महसूस की जा रही है। इसी का ही परिणाम है कि कांग्रेस पार्टी का एक विधायक व पूर्व मंत्री सहित अनेक लोग सत्तारूढ़ गठजोड़ में शामिल हो चुके हैं और कांग्रेस पार्टी में इतनी हताशा फैल चुकी है कि वह चुनाव से पहले ही बठिंडा क्षेत्र के मैदान छोड़ चुकी है। श्री शर्मा ने कहा कि यह पंजाब सरकार की विकासशील नीतियों व आम कार्यकर्ताओं के परिश्रम का ही परिणाम है कि प्रदेश का राजनीतिक वातावरण श्री मोदी के पक्ष में बनता जा रहा है और इस क्रम को और भी गति देने की आवश्यकता है। इसके लिए हमें हर मतदाता तक अपनी निजी पहुंच बनानी होगी और उनका मतदान सुनिश्चित करवाना होगा।

बैठक में समिति के चेयरमैन श्री बलरामजी दास टंडन, उप-चेयरमैन श्री अश्विनी शर्मा, पार्टी की प्रदेश कार्यकारिणी के पदाधिकारी श्री अजय जमवाल, श्री राकेश राठौर, श्री राजिंद्र मोहन सिंह छीना, डा. सुभाष शर्मा, श्री तरुण चुग, सभी समितियों के अध्यक्ष सहित भारी संख्या में अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे। ■

आम चुनाव 2014 में भाजपा की विजय की संभावना : नरेन्द्र मोदी

कांग्रेस-नीत यूपीए सरकार के दूसरे कार्यकाल से निराश होकर इस सरकार के शासन का अंत होते देखते हुए एक शोध फर्म 'मोदी एनालिटिक्स' का कहना है कि आम चुनावों के बाद अगली सरकार का निर्माण भाजपा द्वारा किए जाने की संभावना है। इस शोध फर्म की एक रिपोर्ट 'एशिया पेसिफिक आउटलुक: ए स्लो स्टार्ट टू दि ईयर' नाम की रिपोर्ट में कहा गया है कि वर्तमान कांग्रेस-नीत सरकार द्वारा अपने दूसरे कार्यकाल में निराशाजनक प्रदर्शन को देखते हुए इस सरकार के शासन का अंत हो जाने की संभावना है। सम्भावना है कि नई सरकार का नेतृत्व भाजपा के प्रधानमंत्री पद के प्रत्याशी श्री नरेन्द्र मोदी को बेहतर सुशासन का अवसर प्राप्त हो सकेगा। 7 अप्रैल से शुरू होने वाले नौ चरणों के लोकसभा चुनाव शुरू होकर 16 मई को वोटों की गिनती के साथ सम्पन्न होंगे। विभिन्न ओपीनियन पोलों द्वारा किए गए सर्वेक्षणों से इन आम चुनावों में भाजपा-नीत एनडीए की विजय बताई गई है। ■